सप्तम अध्याय

आधुनिककालीन काव्य संबंधी शोध-कार्य ः
वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन

7.1 भारतेन्दु और द्विवेदीयुगीन काव्य संबंधी शोध-कार्य ः वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन

7.2 छायावाद और प्रगतिवाद काव्य संबंधी शोध-कार्य ः वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन

7.3 राष्ट्रीय, सांस्कृतिक काव्य धारा और गीतिकाव्य संबंधी शोध-कार्य ः वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन

7.4 प्रयोगवाद, नई कविता एवं स्वातंत्र्योत्तर काव्य संबंधी शोध-कार्य ः वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन

7.5 आधुनिककालीन संबंधी सामान्य, सैद्धांतिक एवं तुलनात्मक शोध-कार्य ः वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन

इससे पूर्व अध्याय में रीतिकाल संबंधी शोध-कार्य का वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन किया गया है। इस अध्याय में आधुनिककालीन काव्य संबंधी शोध-कार्य का वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन किया गया है। आधुनिक काल को आगे पांच उपभागों में विभक्त किया गया है। भारतेन्दु और द्विवेदीयुगीन काव्य संबंधी शोध-कार्य, छायावाद और प्रगतिवाद काव्य संबंधी शोध-कार्य, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक काव्यधारा और गीतिकाव्य संबंधी शोध-कार्य, प्रयोगवाद, नई कविता एवं स्वातंत्र्योत्तर काव्य संबंधी शोध-कार्य तथा आधुनिककालीन संबंधी सामान्य, सैद्धांतिक एवं तुलनात्मक शोध-कार्य। इनका क्रमानुसार वर्णन इस प्रकार है-

7.1 भारतेन्दु और द्विवेदीयुगीन काव्य संबंधी शोध-कार्य ः वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन-

विवेच्य विश्वविद्यालयों में भारतेन्दु और द्विवेदीयुगीन काव्य संबंधी **7** शोध-ग्रंथ (सन् **1991** से **2010** तक) प्राप्त हुए हैं, इनका क्रमानुसार वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन इस प्रकार है-

1. शोधार्थी - उपाध्याय, रवीन्द्र कुमार

शोध-विषय - युग-संक्रमण की दृष्टि से राय देवी प्रसाद 'पूर्ण' के काव्य का अध्ययन

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - शर्मा, जय प्रकाश

वर्ष - 1994

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **577** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में भारतेन्दु और द्विवेदी युग की परिस्थितियों की चर्चा करते हुए, राय देवी प्रसाद 'पूर्ण' के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में युग-

संक्रमण के परिचय के साथ-साथ, भारतेन्दु और द्विवेदी युग के प्रमुख काव्य-संक्रमणों का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में राय देवी प्रसाद 'पूर्ण' के काव्य के अनुभूति पक्ष के परिप्रेक्ष्य में युग-संक्रमण का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में युग-संक्रमण के परिप्रेक्ष्य में राय देवी प्रसाद 'पूर्ण' के काव्य के विचारात्मक पक्ष का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में राय देवी प्रसाद 'पूर्ण' के काव्य के शिल्प पक्ष के परिप्रेक्ष्य में युग-संक्रमण का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमानुसार है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत हैं। विषय-सूची में पृष्ठ संख्या का ब्यौरा नहीं दिया गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां हैं। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सामान्य है।

2. शोधार्थी - सुधा

शोध-विषय - भारतेन्दु-काव्य का शैली वैज्ञानिक अध्ययन

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - वेदालंकार, विजय कुमार

वर्ष - 1996

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **184** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में भारतेन्दु हरिशचन्द्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के परिचय के साथ, शैली-विज्ञान का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में भारतेन्दु-काव्य के परिप्रेक्ष्य में चयन का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में भारतेन्दु-काव्य के परिप्रेक्ष्य में विचलन का

विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में भारतेन्दु-काव्य के परिप्रेक्ष्य में समानान्तरता का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में भारतेन्दु-काव्य के परिप्रेक्ष्य में अप्रस्तुत-विधान का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण तथा पृष्ठांकन यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट है। मात्रा व विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य सामान्य है तथा जिल्दबंदी अच्छी है।

3. शोधार्थी - अनुबाला

शोध-विषय - मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में आधुनिकता

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - सिंहल, बैजनाथ

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **276** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में आधुनिकता का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में गुप्त के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में गुप्त के रामकाव्य के परिप्रेक्ष्य में आधुनिकता का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में महाभारत एवं कृष्ण-काव्य पर आधारित रचनाओं के परिप्रेक्ष्य में आधुनिकता का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में ऐतिहासिक एवं अन्य काव्यों के परिप्रेक्ष्य में आधुनिकता का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ में शोध-नियमों का समुचित पालन नहीं हुआ है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण तथा पृष्ठांकन सही हैं। पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अनुच्छेदों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी

संबंधी अशुद्धियों का परिहार किया गया है। प्रबंध का टंकण सुन्दर तथा सुपाठ्य है, जिल्दबंदी ठीक है।

4. शोधार्थी - कुमार, सतीश

शोध-विषय - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और उनकी कविता

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - बत्रा, अशोक कुमार

वर्ष - 2005

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **240** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में शुक्ल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में शुक्ल के काव्य-संसार का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में शुक्ल के काव्य के परिप्रेक्ष्य में काव्य-संवेदना के विविध पक्षों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में प्रकृति-चित्रण का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में काव्य-शिल्प का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा व विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां रह गई हैं। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी अच्छी हैं।

5. शोधार्थी - चन्द्रदत

शोध-विषय - भारतेन्दु हरिशचन्द्र के काव्य में सांस्कृतिक चेतना

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - सिंह, राजेन्द्र

वर्ष - 2005

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **241** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में सांस्कृतिक चेतना का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में भारतेन्दु के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में भारतेन्दु-काव्य के परिप्रेक्ष्य में समाज के विविध पक्षों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में भारतेन्द-काव्य के परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक चेतना का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में सांस्कृतिक चेतना के अन्य आयामों का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति के उपादानों का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमानुसार है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेत अनुपस्थित हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रात्मक त्रुटियां व विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां बहुत कम हैं। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

6. शोधार्थी - शर्मा, इन्दु

शोध-विषय - श्रीधर पाठक के काव्य में प्रेम और सौन्दर्य

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - पाण्डेय, रामसजन

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **215** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में प्रेम और सौन्दर्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में पाठक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में पाठक के काव्य के परिप्रेक्ष्य में प्रेम-निरूपण का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में पाठक के काव्य के परिप्रेक्ष्य

में सौन्दर्य-विधान का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत उपलब्ध नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सुगम, शैली प्रवाहपूर्ण है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सजग रही है। प्रबंध का टंकण सुपाठ्य है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

7. शोधार्थी - शर्मा, शालिनी

शोध-विषय - मैथिलीशरण गुप्त के प्रबंध काव्यों का प्रोक्तीय अध्ययन

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - शर्मा, वेदव्रत

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **360** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में गुप्त के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में प्रोक्ति का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में प्रोक्ति-अनुभाग का रेखांकन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में प्रोक्ति-संरचना के परिप्रेक्ष्य में गुप्त के काव्य का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में प्रोक्ति के परिप्रेक्ष्य में गुप्त-काव्य का शैलीपरक विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में प्रोक्ति के परिप्रेक्ष्य में गुप्त के काव्य का विश्लेषण-प्रक्रियांकन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन नहीं करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम व्यवस्थित हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण सही हैं।

पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अनुच्छेदों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उच्च स्तर का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

विवेच्य विश्वविद्यालयों में भारतेन्दु और द्विवेदीयुगीन काव्य संबंधी **7** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक में **5** शोध-विषयों पर शोध-कार्य हुआ है। कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र में **1** शोध-विषय पर तथा पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में भी **1** शोध-विषय पर शोध-प्रबंध उपलब्ध हुआ है।

7.2 छायावाद और प्रगतिवाद काव्य संबंधी शोध-कार्य ः वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन

विवेच्य विश्वविद्यालयों में छायावाद और प्रगतिवाद काव्य संबंधी **17** शोध-ग्रंथ (सन् **1991** से **2010** तक) प्राप्त हुए हैं, इनका क्रमानुसार वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन इस प्रकार है-

1. शोधार्थी - प्रभाकर, अनीता

शोध-विषय - सुमित्रानंदन पंत के काव्य का सौन्दर्यबोधात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - कुन्तल, रमेश 'मेघ'

वर्ष - 1991

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **10** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **435** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में पंत के व्यक्तित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में पंत के कृतित्व का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में सौन्दर्यशास्त्र का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में पंत-काव्य के परिप्रेक्ष्य में प्रमुख सौन्दर्यबोधात्मक अवधारणाओं का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में पंत के काव्य में सौन्दर्यबोधात्मकता के परिप्रेक्ष्य में

स्वच्छंदतावादी काव्य के आधार तत्त्वों का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में भोगवादी काव्य का सौन्दर्यबोधात्मक अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में मार्क्सवादी विचारवस्तु के संदर्भ में पंत के काव्य का सौन्दर्यबोधात्मक विश्लेषण किया गया है। अष्टम अध्याय में गांधीवादी धारा के परिप्रेक्ष्य में पंत-काव्य का सौन्दर्यबोधात्मक विवेचन किया गया है। नवम अध्याय में अरविंदवादी विचारों की अंतर्वस्तु के परिप्रेक्ष्य में पंत-काव्य की सौन्दर्यबोधात्मकता का अध्ययन किया गया है। दशम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमानुसार है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण सही हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक दिए गए हैं। उपसंहार में शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां नहीं हैं। प्रबंध का टंकण कार्य धूमिल एवं अस्पष्ट है तथा जिल्दबंदी ठीक है।

2. शोधार्थी - अनेजा, पंकज

शोध-विषय - सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के काव्य में सामाजिक मूल्य

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - सिंगल, रामधारी

वर्ष - 1992

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **4** खण्डों के अंतर्गत **9** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **362** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **2** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में मूल्यों का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में निराला के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं तद्युगीन परिवेश का परिचय दिया गया है। द्वितीय खंड में **5** अध्याय हैं। तृतीय अध्याय में निराला-काव्य में वर्णित समष्टिपरक एवं पारिवारिक मूल्यों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में निराला-काव्य के संदर्भ में राजनैतिक मूल्यों की चर्चा की गई है। पंचम अध्याय में निराला-काव्य के संदर्भ में आर्थिक तथा भौतिक मूल्यों का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में निराला-काव्य के संदर्भ

में धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में निराला -काव्य के आधार पर साहित्यिक मूल्यों का विश्लेषण किया गया है। तृतीय खंड में **1** अध्याय है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय तथा उपलब्धियां दी गई है। चतुर्थ खंड में नवम अध्याय में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा व विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी सामान्य स्तर के हैं।

3. शोधार्थी - शर्मा, बीरबल

शोध-विषय - कवि जयशंकर प्रसाद की रचना-प्रक्रिया

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - मैनी, धर्मपाल

वर्ष - 1992

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **221** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में रचना-प्रक्रिया का सामान्य परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में बाह्य अभ्यन्तरीकरण को विश्लेषित किया गया है। चतुर्थ अध्याय में जयशंकर प्रसाद के व्यक्तित्व और कृतित्व की चर्चा की गई है। पंचम अध्याय में जयशंकर प्रसाद की काव्य-साधना का उल्लेख किया गया है। षष्ठ अध्याय में जयशंकर प्रसाद के काव्य-विकास का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में जयशंकर प्रसाद की काव्य-कला का अभ्यन्तर का बाह्यीकरण के आधार पर अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची शोध-प्रविधि के अनुरूप नहीं है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सुन्दर तथा शैली प्रवाहमयी हैं। मात्रा, विराम चिह्न तथा वर्त नी संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण सामान्य है तथा जिल्दबंदी ठीक है।

4. शोधार्थी - जॉली, रमा

शोध-विषय - डॉ. रामकुमार वर्मा के प्रबंध काव्यों का रूपवैज्ञानिक अध्ययन

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - शर्मा, वेदव्रत

वर्ष - 1996

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **4** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **264** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में वर्मा-काव्य के परिप्रेक्ष्य में रूप-विचार का उल्लेख किया गया है। तृतीय अध्याय में वर्मा -काव्य के परिप्रेक्ष्य में शब्द-विचार का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में वर्मा-काव्य के परिप्रेक्ष्य में रूपांतर का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची तथा पृष्ठांकन सही हैं। पाद-टिप्पणियां तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहपूर्ण है। अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सजग रही है। प्रबंध का टंकण कार्य सामान्य है तथा जिल्दबंदी अच्छी है।

5. शोधार्थी - सिंह, राजबीर

शोध-विषय - सौन्दर्य एवं औदात्य संबंधी सिद्धान्तों के आधार पर सुमित्रानंदन पंत के काव्य का मूल्यांकन

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - तिवारी, शैल कुमारी

वर्ष - 1997

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **272** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में सौन्दर्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में औदात्त का तात्त्विक अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में पंत के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में पंत के काव्य के परिप्रेक्ष्य में सौन्दर्य का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में पंत-काव्य के परिप्रेक्ष्य में औदात्य का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा पृष्ठांकन सही हैं। अध्याय व्यवस्थित है। पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेतों का उल्लेख नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सुगम है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सजग रहा है। टंकण-कार्य उत्तम तथा सुपाठ्य है, जिल्दबंदी अच्छी है।

6. शोधार्थी - कुमारी, कमलेश

शोध-विषय - सुमित्रानंदन पंत ः काव्य के विविध सोपान और उनका मूल्यांकन

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - वर्मा, हरिशचन्द्र

वर्ष - 1998

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **348** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित

की गई है। प्रथम अध्याय में पंत के व्यक्तित्व के साथ, तद्युगीन परिवेश का अध्ययन किया गया है। द्वितीय अध्याय में पंत के कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में पंत के छायावादी काव्य का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में पंत के प्रगतिशील काव्य का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में पंत के अंतर चेतनावादी काव्य का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में लोकायतन का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा संयत तथा स्पष्ट है। वर्तनी तथा मात्रा संबंधी अशुद्धियां कम हैं। परिशिष्ट में आकारादि नियम का पालन नहीं किया गया है। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी सामान्य हैं।

7. शोधार्थी - शर्मा, रूपराम

शोध-विषय - प्रगतिवादी काव्य-चिंतन के परिप्रेक्ष्य में मुक्तिबोध का काव्य-दर्शन

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - मेहता, रामनाथ

वर्ष - 1999

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **340** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में प्रगतिवादी एवं प्रगतिवादी काव्य-दर्शन का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में मुक्तिबोध के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में मुक्तिबोध के काव्य के स्वरूप का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में प्रगतिवादी काव्य के परिप्रेक्ष्य में मुक्तिबोध के काव्य-उद्देश्य का उल्लेख किया गया है। पंचम अध्याय में तत्त्व संबंधी काव्य-दर्शन का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में शिल्प संबंधी काव्य-दर्शन का

विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में मुक्तिबोध द्वारा स्थापित काव्यवादों से संबंधित नवीन काव्य-दर्शनों का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। प्रबंध लेखन में त्रुटियां हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। भाषागत व वर्तनी संबंधी अशुद्धियां हैं। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी सामान्य हैं।

8. शोधार्थी - कुमारी, राजेश

शोध-विषय- लोकायतन का सांस्कृतिक अध्ययन

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - शर्मा, वेदव्रत

वर्ष - 2000

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **10** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **530** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संस्कृति का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में पंत-काव्य के प्रेरणा-स्रोतों और सृजन-चेतना का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में लोकायतन के परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक मूल्यों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में लोकायतन के परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक बोध का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में लोकायतन के परिप्रेक्ष्य में पौराणिक एवं औपनिषदिक दर्शन का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में लोकायतन के परिप्रेक्ष्य में समाज एवं लोक-संस्कृति के स्वरूप का विवेचन किया गया है। सप्तम अध्याय में लोकायतन के परिप्रेक्ष्य में काम, चिंतन एवं प्रेम का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में लोकायतन के परिप्रेक्ष्य में विविध भारतीय कलाओं का उल्लेख किया गया है। नवम

अध्याय में लोकायतन के परिप्रेक्ष्य में भाषा का सांस्कृतिक अध्ययन किया गया है। दशम अध्याय में शोध-विषय का सार, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची सही है। अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा-शैली स्पष्ट है। मात्रात्मक अशुद्धियां कम हैं। टंकण धूमिल एवं जिल्दबंदी मजबूत हैं।

9. शोधार्थी - मलिक, विमला

शोध-विषय - नागार्जुन के काव्य में संवेदना और शिल्प

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - सिंहल, बैजनाथ

वर्ष - 2001

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **267** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नागार्जुन के व्यक्तित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में कृतित्व का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में संवेदना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में नागार्जुन के काव्य के परिप्रेक्ष्य में संवेदना का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में शिल्प का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में नागार्जुन के काव्य के परिप्रेक्ष्य में शिल्प का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। अध्यायों के समक्ष पृष्ठांकन नहीं किया गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध का टंकण कार्य ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

10. शोधार्थी - यादव, सुशीला

शोध-विषय - पंत कृत लोकायतन में सांस्कृतिक एवं दार्शनिक चेतना

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - शर्मा, श्याम सुन्दर

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **324** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में पंत के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में छायावादी परिस्थितियों का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में संस्कृति एवं दर्शन का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में लोकायतन के परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक दर्शन का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में लोकायतन के परिप्रेक्ष्य में दार्शनिक चेतना का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध के मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण उच्च कोटि का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

11. शोधार्थी - सिंह, राजेन्द्र

शोध-विषय - निराला के काव्य में लोक-चेतना

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - शर्मा, पूर्ण चन्द

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **10** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **266** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता

ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में निराला के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में लोक-चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में लोक-चेतना के परिप्रेक्ष्य में निराला के काव्य के नैतिक पक्ष का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में निराला-काव्य में लोक-चेतना के परिप्रेक्ष्य में भौतिक पक्ष का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में लोक और संस्कार का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में प्रकृति का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में निराला-काव्य में लोक-चेतना के परिप्रेक्ष्य में आर्थिक पक्ष का उल्लेख किया गया है। अष्टम अध्याय में दार्शनिक पक्ष का विवेचन किया गया है। नवम अध्याय में राजनीतिक पक्ष का विश्लेषण किया गया है। दशम अध्याय में भाषा-शब्दावली एवं लोकोक्तियों का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम व्यतिक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत उपलब्ध नहीं हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

12. शोधार्थी - सुमन

शोध-विषय - महादेवी वर्मा के काव्य में वेदना का स्वरूप

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - सिवाच, विद्या

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **346** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में काव्यात्मक वेदना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में महादेवी-काव्य के प्रेरणा स्रोतों एवं कारणभूत परिस्थितियों का अध्ययन किया गया है।

तृतीय अध्याय में महादेवी के व्यक्तित्व का परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में महादेवी के काव्य-कृतियों के परिप्रेक्ष्य में वेदना का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में महादेवी के काव्य में वेदना के परिप्रेक्ष्य में रहस्यवाद का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में महादेवी के काव्य के परिप्रेक्ष्य में प्रकृति का विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध-टंकण सामान्य है तथा जिल्दबंदी ठीक है।

13. शोधार्थी - मलिक, अनुरीता

शोध-विषय - नागार्जुन के काव्य में व्यवस्था-चित्रण

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - सिंहल, बैजनाथ

वर्ष - 2004

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **298** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नागार्जुन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में व्यवस्था का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में नागार्जुन के काव्य के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक व्यवस्था का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में आर्थिक व्यवस्था का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में राजनीतिक व्यवस्था का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में सांस्कृतिक व्यवस्था का विवेचन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं।

अध्यायीकरण में अध्यायों के समक्ष पृष्ठांकन नहीं किया गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा प्रभावशाली है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

14. शोधार्थी - सिंह, दलीप

शोध-विषय - नागार्जुन के काव्य में बिम्ब-योजना

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - पाण्डेय, रामसजन

वर्ष - 2005

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **284** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में बिम्ब का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में नागार्जुन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ, नागार्जुन के बिम्ब-विधान के पृष्ठाधार का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में नागार्जुन के काव्य के परिप्रेक्ष्य में ऐन्द्रिय-बिम्बों का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में दृश्य से इतर ऐन्द्रिय-बिम्बों और संश्लिष्ट-बिम्बों का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में सृजन-प्रेरणापरक, अनुभूतिपरक और अभिव्यंजनापरक बिम्बों का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम शीर्षक के नीचे निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण सही हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक दिए गए हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उच्च स्तर का है तथा जिल्दबंदी ठीक है।

15. शोधार्थी - चंद, प्यार

शोध-विषय - त्रिलोचन का काव्य ः कथ्य एवं शिल्प

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - कुमार, कृष्ण

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **464** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में त्रिलोचन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में त्रिलोचन के काव्यात्मक विकास का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में त्रिलोचन के काव्य के परिप्रेक्ष्य में कथ्य का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में त्रिलोचन के काव्य के परिप्रेक्ष्य में शिल्प-विधान का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में समकालीन हिन्दी कविता के परिप्रेक्ष्य में त्रिलोचन के काव्य का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक व उपशीर्षक दिए गए हैं। उपसंहार में शोध-संकेतों का पालन किया गया है। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

16. शोधार्थी - बोकन, अमितेश

शोध-विषय - केदारनाथ के काव्य में संवेदना और शिल्प

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - मिश्र, नरेश

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **342** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संवेदना और शिल्प का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में अग्रवाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में अग्रवाल के काव्य के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक यथार्थ का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में अग्रवाल के काव्य के परिप्रेक्ष्य में प्रेम का चित्रण किया गया है। पंचम अध्याय में प्रकृति-चित्रण का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में व्यंग्य का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में शिल्प-विधान का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा व विराम-चिह्नों की अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क नहीं रहा है। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी उत्तम कोटि के हैं।

17. शोधार्थी - कुमार, दुष्यंत

शोध-विषय - नरेन्द्र शर्मा के काव्य में प्रेम और सौन्दर्य

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - आचार्य बुद्धदेव

वर्ष - 2008

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **346** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नरेन्द्र शर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में प्रेम और सौन्दर्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में शर्मा के काव्य के परिप्रेक्ष्य में मानवीय सौन्दर्य का निरूपण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में शर्मा के काव्य के परिप्रेक्ष्य में प्रकृति-सौन्दर्य का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में शर्मा के काव्य के

परिप्रेक्ष्य में प्रेम का निरूपण किया गया है। षष्ठ अध्याय में शर्मा के काव्य के परिप्रेक्ष्य में सौन्दर्याभिव्यक्ति के उपादानों का विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत उपलब्ध नहीं हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी उत्तम हैं।

विवेच्य विश्वविद्यालयों में छायावाद और प्रगतिवाद-काव्य संबंधी **17** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक में **9** शोध-विषयों पर, कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र में **3** शोध-विषयों पर, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में **2** शोध-विषयों पर, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में भी **2** शोध-विषयों पर तथा गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में **1** शोध-विषय पर शोध-कार्य हुआ है।

7.3 राष्ट्रीय, सांस्कृतिक काव्यधारा और गीतिकाव्य संबंधी शोध-कार्य ः वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन

विवेच्य विश्वविद्यालयों में राष्ट्रीय, सांस्कृतिक काव्यधारा और गीतिकाव्य संबंधी **21** शोध-ग्रंथ (सन् **1991** से **2010** तक) प्राप्त हुए हैं, इनका क्रमानुसार वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन इस प्रकार है-

1. शोधार्थी - रामकरण

शोध विषय - राष्ट्रीय काव्य के आलोक में सोहन लाल द्विवेदी के काव्य का मूल्यांकन

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - प्रकाश, जय

वर्ष - 1992

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **530** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा का परिचयात्मक अध्ययन किया गया है। द्वितीय अध्याय में सोहन लाल द्विवेदी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में द्विवेदी के काव्य के परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक चेतना का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में द्विवेदी की राष्ट्रीय कविता के साथ, उसके विविध आयामों की चर्चा की गई है। पंचम अध्याय में द्विवेदी के काव्य में शिल्पधर्मी परीक्षण का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। विषय-सूची में अध्यायों के समक्ष पृष्ठांकन नहीं किया गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां बहुत हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी सामान्य स्तर के हैं।

2. शोधार्थी - शर्मा, सत्येन्द्र देव

शोध-विषय - राष्ट्रवाद की अवधारणा और माखन लाल चतुर्वेदी का काव्य

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - अवस्थी, ओम

वर्ष - 1992

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **10** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **434** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में राष्ट्रवाद का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी काव्य के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रवाद का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में माखन लाल चतुर्वेदी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में चतुर्वेदी के काव्य के

परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रवादी ऐकता का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में चतुर्वेदी के काव्य के परिप्रेक्ष्य में स्वराज्य के राष्ट्रवादी संकल्प का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में चतुर्वेदी के काव्य के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय संस्कृति का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में राष्ट्रीय समस्याओं का उल्लेख किया गया है। अष्टम अध्याय में राष्ट्रवादी वर्ग-चित्रण का अध्ययन किया गया है। नवम अध्याय में राष्ट्रवादी अवधारणा का कलात्मकता के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया गया है। दशम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ व्यतिक्रम में है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण में अध्यायों के समक्ष पृष्ठांकन नहीं किया गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा, विराम चिह्न तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य सामान्य स्तर का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

3. **शोधार्थी -** प्रियवंदा

शोध-विषय - शैली वैज्ञानिक दृष्टि से दिनकर की काव्य-भाषा का वैशिष्ट्य

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - शर्मा, वेदव्रत

वर्ष - 1993

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **9** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **309** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में शैली-विज्ञान का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में दिनकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में दिनकर के काव्य के परिप्रेक्ष्य में चयन का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में दिनकर के काव्य के परिप्रेक्ष्य में

विचलन का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में समानान्तरता का चित्रण किया गया है। षष्ठ अध्याय में अप्रस्तुत-विधान का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में विपथन का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में विरलन का विश्लेषण किया गया है। नवम अध्याय में प्रोक्ति का विवेचन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अनुच्छेदों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। संदर्भ -सूची पुस्तकानुक्रम में है। प्रबंध की भाषा स्पष्ट, शैली प्रवाहपूर्ण है। अशुद्धियां अल्प हैं एवं टंकण अच्छा है। जिल्दबंदी सशक्त है।

4. शोधार्थी - कमल, कमलेश

शोध-विषय - श्याम नारायण पाण्डेय के काव्य में इतिहास और राष्ट्रवाद

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - बावा, रीता

वर्ष - 1994

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **519** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में पाण्डेय के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में युग, समाज और संस्कृति का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में पांडेय के काव्य के परिप्रेक्ष्य में इतिहास का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में पांडेय के काव्य के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रवाद का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में पांडेय के काव्य के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय-ऐतिहासिक काव्य की कलात्मकता का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में पांडेय का हिन्दी साहित्य को दिए योगदान का विवेचन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सजग नहीं रही है। प्रबंध-टंकण अस्पष्ट है तथा जिल्दबंदी सामान्य है।

5. शोधार्थी - देशराज

शोध-विषय - माखन लाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - गुप्त, चमन लाल

वर्ष - 1994

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **291** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में राष्ट्रीयता का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में चतुर्वेदी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीयता के परिप्रेक्ष्य में राजनीतिक आयाम का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में सामाजिक आयाम का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में धार्मिक आयाम का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में सांस्कृतिक आयाम का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में आर्थिक आयाम का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ व्यतिक्रम में है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण में अध्यायों के समक्ष पृष्ठांकन नहीं किया गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा, विराम चिह्न तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां न के बराबर है। प्रबंध का टंकण कार्य सामान्य स्तर का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

6. शोधार्थी - ठाकुर, कश्मीर सिंह

शोध-विषय - हरिवंश राय बच्चन के काव्य में प्रेम और सौन्दर्य-भावना

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - रैणा, कृष्णा

वर्ष - 1995

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **4** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **406** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हरिवंश राय बच्चन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ, प्रेम और सौन्दर्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में आधुनिक हिन्दी कविता के परिप्रेक्ष्य में प्रेम और सौन्दर्य का उल्लेख किया गया है। तृतीय अध्याय में बच्चन के काव्य के परिप्रेक्ष्य में प्रेम का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में बच्चन के काव्य के परिप्रेक्ष्य में सौन्दर्य का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत उपलब्ध नहीं हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य अस्पष्ट है तथा जिल्दबंदी सामान्य है।

7. शोधार्थी - शर्मा, कुसुम

शोध-विषय - श्याम नारायण पाण्डेय के काव्य का काव्यशास्त्रीय अध्ययन

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - शर्मा, वेदव्रत

वर्ष - 2000

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **208** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में पाण्डेय के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में पाण्डेय के काव्य के परिप्रेक्ष्य में रस-योजना का विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में अलंकार और छंद-योजना का विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में शब्द-शक्ति एवं काव्य भाषा का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में काव्य गुण एवं रीति-योजना का उल्लेख किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के सर्वथा प्रतिकूल है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। पृष्ठांकन की गणना विषयानुक्रमणिका से कर ली गई है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

8. शोधार्थी - कुमार, सुशील

शोध-विषय - रामधारी सिंह दिनकर का काव्य ः कथ्य एवं शिल्पगत अध्ययन

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - शर्मा, मंजु

वर्ष - 2001

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **4** खंडों के अंतर्गत **9** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **387** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **3** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में कथ्य एवं शिल्प का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में रामधारी सिंह दिनकर के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं तद्युगीन परिवेश का परिचय दिया गया है। द्वितीय खंड में **5** अध्याय हैं। चतुर्थ अध्याय में रामधारी सिंह दिनकर के काव्य के परिप्रेक्ष्य में कथ्य-इतिहास के आयामों का अध्ययन

किया गया है। पंचम अध्याय में आधुनिक-बोध के परिप्रेक्ष्य में रामधारी सिंह दिनकर के काव्य की मूल-चेतना का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में रामधारी सिंह दिनकर के काव्य के परिप्रेक्ष्य में कथ्य-दर्शन के आयामों अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में जीवन-मूल्यों का विश्लेषण किया गया है। अष्टम अध्याय में रामधारी सिंह दिनकर के काव्य के विशिष्ट शिल्प-विधान का अध्ययन किया गया है। नवम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

9. शोधार्थी - शुभलता

शोध-विषय - उदयशंकर भट्ट की काव्य-यात्रा ः संवेदना और शिल्प

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - बाबूराम

वर्ष - 2001

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **315** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में भट्ट के व्यक्तित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में भट्ट की कविताओं का परिचयात्मक विवरण दिया गया है। तृतीय अध्याय में भट्ट के काव्य की कथ्यगत विशेषताओं का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में भट्ट के काव्य के परिप्रेक्ष्य में शिल्प का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम शीर्षक के नीचे मध्य में दिए गए हैं। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सजग रही है। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

10. शोधार्थी - सिंगला, आरती

शोध-विषय - गीतिकाव्य परम्परा में शिव मंगल सिंह 'सुमन' का स्थान

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - सिंह, हरपाल

वर्ष - 2001

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **365** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में गीतिकाव्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में सुमन के व्यक्तित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में सुमन की काव्य-यात्रा का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में सुमन के गीतिकाव्य के परिप्रेक्ष्य में उनके विविध विचारों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में सुमन के गीतिकाव्य के परिप्रेक्ष्य में जीवन-दर्शन का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में सुमन के गीतिकाव्य के परिप्रेक्ष्य में शिल्प-विधान का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा व विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उत्तम है तथा जिल्दबंदी सामान्य है।

11. शोधार्थी - सिंह, हरचरण

शोध-विषय - रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य में प्रयुक्त सांस्कृतिक शब्दावली का कोश-वैज्ञानिक अध्ययन

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - शर्मा, वेदव्रत

वर्ष - 2001

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **404** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में दिनकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में दिनकर के काव्य-परिवेश का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में दिनकर के काव्य के परिप्रेक्ष्य में शब्द-समूह का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में दिनकर के काव्य के परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक शब्दावली का वर्गीकरण किया गया है। पंचम अध्याय में सांस्कृतिक शब्दावली कोश का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य अस्पष्ट है तथा जिल्दबंदी सामान्य है।

12. शोधार्थी - कुमार, अनिल

शोध-विषय - माखन लाल चतुर्वेदी के काव्य में प्रेम और सौन्दर्य निरूपण

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - शर्मा, सत्यनारायण

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **361** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में सौन्दर्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में प्रेम का तात्त्विक अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में चतुर्वेदी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में चतुर्वेदी के काव्य के परिप्रेक्ष्य में मानवीय सौन्दर्य का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में प्रकृति-सौन्दर्य का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में प्रेम-भावना का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में शिल्पगत सौन्दर्य का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक व उपशीर्षक दिए गए हैं। उपसंहार में शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

13. शोधार्थी - कुमार, योगेन्द्र

शोध-विषय - प्रो. हरिशंकर 'आदेश' के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - गौड़, पूर्णमल

वर्ष - 2004

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **333** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में राष्ट्रीय चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में आदेश के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में आदेश-काव्य में राष्ट्रीय चेतना के परिप्रेक्ष्य में सामाजिकता का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में राजनीतिकता का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में सांस्कृतिक पक्ष का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची सही है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत उपलब्ध नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क नहीं रहा है। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

14. शोधार्थी - बाला, सरोज

शोध-विषय - राम नरेश त्रिपाठी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - मिश्र, नरेश

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **240** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में राष्ट्रीय चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में त्रिपाठी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में सामाजिकता के संदर्भ में राम नरेश त्रिपाठी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय चेतना का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में सांस्कृतिक संदर्भ में राष्ट्रीय चेतना का उल्लेख किया गया है। षष्ठ अध्याय में प्राकृतिक परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय चेतना का विवेचन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा प्रभावशाली है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

15. शोधार्थी - रानी, शोभा

शोध-विषय - उदयभानु हंस के काव्य में राष्ट्रीयता का स्वर

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - गुप्त, चमन लाल

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **201** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हंस के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में हंस द्वारा रचित महाकाव्य 'सन्त सिपाही' के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीयता का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में हंस द्वारा रचित 'देसां में देस हरियाणा' और 'हरियाणा गौरव गाथा' के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीयता का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में हंस द्वारा रचित फुटकल कविताओं के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय चेतना का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम व्यतिक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण सही हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक दिए गए हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उच्च स्तर का है तथा जिल्दबंदी ठीक है।

16. शोधार्थी - गौड़, राज कुमार

शोध-विषय - स्वच्छन्दतावादी प्रवृतियों के परिप्रेक्ष्य में बच्चन के काव्य का मूल्यांकन

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - शर्मा, सत्यनारायण

वर्ष - 2005

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **262** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में स्वच्छन्दतावाद का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में बच्चन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में बच्चन के काव्य के परिप्रेक्ष्य में स्वच्छन्दतावाद की प्रमुख भावगत प्रवृतियों का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में स्वच्छन्दतावाद की अन्य भावगत प्रवृतियों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में शिल्पगत प्रवृतियों का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में स्वच्छन्दतावादी कवियों में बच्चन का स्थान निर्धारित किया गया है। सप्तम अध्याय में स्वच्छन्दतावादी दृष्टि से बच्चन का मूल्यांकन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची ठीक है तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा संयत है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

17. शोधार्थी - रानी, बाला

शोध-विषय - उदयभानु हंस के काव्य में राष्ट्रवाद के स्वर

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - शर्मा, विजयदत्त

वर्ष - 2005

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **337** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हंस के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता का सामान्य अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में राष्ट्रवाद का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में हंस के काव्य की प्रेरक परिस्थितियों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में हंस के काव्य के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रवाद का विश्लेषण किया

गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम व्यतिक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत उपलब्ध नहीं हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

18. शोधार्थी - दत्त, सुनील

शोध-विषय - हरिवंशराय बच्चन के काव्य का शैली-वैज्ञानिक अध्ययन

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - शर्मा, वेदव्रत

वर्ष - 2006

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **9** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **305** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में शैली और शैली-विज्ञान का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में बच्चन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में बच्चन के काव्य के परिप्रेक्ष्य में चयन का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में विचलन का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में समानान्तरता का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में अप्रस्तुत-विधान का विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में विपथन का उल्लेख किया गया है। अष्टम अध्याय में विरलन का अध्ययन किया गया है। नवम अध्याय में बच्चन-काव्य के परिप्रेक्ष्य में प्रोक्ति का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध का टंकण उच्च कोटि का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

19. शोधार्थी - कौर, परमजीत

शोध-विषय - डॉ. रामकुमार वर्मा के काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - रानी, पुष्पा

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत शोध-प्रबंध **3** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **179** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संस्कृति का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में वर्मा के काव्य के परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक अध्ययन के विविध आयामों का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण सही हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध का टंकण कार्य ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

20. शोधार्थी - सिंह, रामपाल

शोध-विषय - सियाराम शरण गुप्त के काव्य का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - शर्मा, वेदव्रत

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **277** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में गुप्त के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय

अध्याय में ध्वनि-विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में गुप्त के काव्य का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में रूप-विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में गुप्त के काव्य का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में वाक्य-विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में गुप्त के काव्य का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में अर्थ-विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में गुप्त के काव्य का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क नहीं रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

21. शोधार्थी - जिन्दल, राजिन्द्र पाल

शोध-विषय - सामाजिक चेतना के संदर्भ में डॉ. हरिवंश राय बच्चन का काव्य

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - कुमार, अशोक

वर्ष - 2008

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **224** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में सामाजिक चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में डॉ. हरिवंश राय बच्चन के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में बच्चन के काव्य में अवतरित समाज का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में बच्चन के काव्य में वर्णित चेतना का स्वरूप प्रकट किया गया है तथा साथ में चेतना का विश्लेषण भी किया गया है। षष्ठ अध्याय में बच्चन के काव्य के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक परिवेश और सामाजिक चेतना के नवीन संदर्भ प्रकट किए गए हैं। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध

संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

विवेच्य विश्वविद्यालयों में राष्ट्रीय, सांस्कृतिक काव्यधारा और गीतिकाव्य संबंधी **21** शोध-विषयों पर शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं। कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र में **9** शोध-विषयों पर, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक में **4** शोध-विषयों पर, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में **3** शोध-विषयों पर, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में भी **3** शोध-विषयों पर तथा गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में **2** शोध-विषयों पर शोध-कार्य हुआ है।

7.4 प्रयोगवाद, नई कविता एवं स्वातंत्र्योत्तर काव्य संबंधी शोध-कार्य ः वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन-

विवेच्य विश्वविद्यालयों में प्रयोगवाद, नई कविता एवं स्वातंत्र्योत्तर काव्य संबंधी **64** शोध-ग्रंथ (सन् **1991** से **2010** तक) प्राप्त हुए हैं, इनका क्रमानुसार वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन इस प्रकार है-

1. शोधार्थी - चौहान, शकुन्तला देवी

शोध-विषय - भारत भूषण अग्रवाल का काव्य ः संवेदना और शिल्प

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - रैणा, कृष्णा

वर्ष - 1991

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **351** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संवेदना और शिल्प का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय

अध्याय में अग्रवाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में अग्रवाल के काव्य के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक चेतना का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में राजनीतिक संवेदना का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में आर्थिक चेतना का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में सामाजिक संवेदना का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में अग्रवाल के काव्य के परिप्रेक्ष्य में शिल्प का उल्लेख किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सजग नहीं रही है। प्रबंध-टंकण अस्पष्ट है तथा जिल्दबंदी सामान्य है।

2. शोधार्थी - शर्मा, विजय कुमार

शोध-विषय - समसामयिक मानवीय सरोकारों की अन्वेषणा के संदर्भ में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के काव्य का विकासात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - अवस्थी, ओम

वर्ष - 1991

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **10** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **583** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में मानवीय सरोकारों और रचना-कर्म का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में सक्सेना के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में सक्सेना के काव्य के परिप्रेक्ष्य में समसामयिक मनुष्य के वर्ग-चरित्र, परिवेशगत यथार्थ और सच्चे-झुठे की पहचान से उभरते हुए मानवीय सरोकारों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में

सक्सेना के काव्य के परिप्रेक्ष्य में समसामयिक ज्वलन्त प्रश्नों से वस्तुपरक साक्षात्कार संबंधी मानवीय सरोकारों का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में सक्सेना के काव्य के परिप्रेक्ष्य में भाव विधान विरन्तन प्रश्नों से आत्मपरक साक्षात्कार संबंधी मानवीय सरोकारों का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में लोक-सम्पृक्ति के ग्रामोन्मुखी मानवीय सरोकारों का विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में समसामयिक मानवीय सरोकारों की कलात्मक अन्वेषणा का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में मानवीय सरोकारों को समर्पित मानवतावादी जीवन-दृष्टि का क्रमिक विकास का उल्लेख किया गया है। नवम अध्याय में सम्प्रेषण के साधन-शब्द, प्रतीक तथा बिम्बों का अध्ययन किया गया है। दशम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत उपलब्ध नहीं हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य अस्पष्ट एवं धूमिल-सा है तथा जिल्दबंदी सामान्य है।

3. शोधार्थी - सिंह, बलवीर

शोध-विषय - भवानी प्रसाद मिश्र की काव्य-भाषा

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - मलिक, भीमसिंह

वर्ष - 1991

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **363** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में काव्य-भाषा का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में मिश्र की काव्य-

भाषा के परिप्रेक्ष्य में लोकग्रह्यता का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में शब्द-विधान का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में मिश्र की काव्य-भाषा का काव्यशास्त्रीय अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में भाषागत अन्य प्रवृतियों का विवेचन किया गया है। सप्तम अध्याय में कतिपय रचनाओं और कतिपय समकालीन कवियों का विवेचन किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ व्यतिक्रम में है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण में अध्यायों के समक्ष पृष्ठांकन नहीं किया गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा, विराम चिह्न तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य सामान्य स्तर का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

4. शोधार्थी - कुमार, अनु

शोध-विषय - मुक्तिबोध की कविताओं का राजनीतिक अनुभव के सौन्दर्यात्मक सारतत्त्व के संदर्भ में अध्ययन

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - शर्मा, नीलम

वर्ष - 1992

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **252** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नई कविता के सैद्धान्तिक विवेचन के साथ, मुक्तिबोध के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में क्रान्तिधर्मी वैचारिकता एवं सौन्दर्यबोध के संदर्भ में मुक्तिबोध की कविताओं का विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में राजनीति की विशिष्ट संकल्पना के परिप्रेक्ष्य में मुक्तिबोध का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में मुक्तिबोध की कविताओं के परिप्रेक्ष्य में राजनीतिक अनुभव का व्यावहारिक विवेचन किया गया है।

पंचम अध्याय में सौन्दर्यात्मक सारतत्त्व का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में मुक्तिबोध की कविताओं के परिप्रेक्ष्य में सौन्दर्यात्मक सारतत्त्व का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम शीर्षक के नीचे मध्य में दिए गए हैं। मुखपृष्ठ पर शोधार्थी का नाम नहीं दिया गया है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सजग रहा है। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

5. शोधार्थी - मधु

शोध-विषय - अनन्य अली के काव्य का लोक-तात्त्विक अध्ययन

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - तनेजा, विनोद कुमार

वर्ष - 1992

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत् वृहत शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **423** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में अनन्य अली के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में लोक-तत्त्व का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में अनन्य अली के काव्य के परिप्रेक्ष्य में लोक-तत्त्वों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में अनन्य अली के काव्य के परिप्रेक्ष्य में लोक-संस्कृति का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में अनन्य अली के काव्य के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक जीवन का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में अनन्य अली के काव्य के परिप्रेक्ष्य में मनोरंजन का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में अनन्य

अली के काव्य के परिप्रेक्ष्य में काव्य रूढ़ियों का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। विषय-सूची में अध्यायों के समक्ष पृष्ठांकन नहीं किया गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा व विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य सामान्य है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

6. शोधार्थी - शर्मा, कुसुम

शोध-विषय - कवि राजेश दयालु राजेश ः व्यक्तित्व एवं कृतित्व

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - सिंह, राजदेव

वर्ष - 1992

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत् बृहत शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **315** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में राजेश के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में काव्य-विषय का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में राजेश के काव्य के परिप्रेक्ष्य में रस-निकष का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में अलंकारों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में भाषा-शैली का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में लक्ष्मीभूत श्रोताओं का विवेचन किया गया है। सप्तम अध्याय में चलती-फिरती सामयिक टिप्पणियों का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम मध्य भाग में नहीं हैं। शोधार्थी नाम व वर्षोल्लेख भी व्यतिक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा व विराम चिह्नों की अशुद्धियां कहीं-कहीं मिलती हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी मध्यम स्तर के हैं।

7. शोधार्थी - कपूर, रेणु

शोध-विषय - रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'त ण' के काव्य में सौन्दर्य-चेतना

(चिन्तन, संवेदना और शिल्प के विशेष संदर्भ में)

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - मलिक, भीमसिंह

वर्ष - 1993

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **290** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'त ण' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में सौन्दर्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में कवि रामेश्वर की सौन्दर्य-दृष्टि के परिप्रेक्ष्य में चिन्तन पक्ष का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में कवि की सौन्दर्य-दृष्टि के वैशिष्ट्य का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में कवि की सौन्दर्य-संवेदना का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में सौन्दर्य-निरूपण में प्रयुक्त शिल्प-तत्त्वों का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। वर्ष का उल्लेख कहीं भी नहीं किया

गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सामान्य है।

8. शोधार्थी - लता, प्रेम

शोध-विषय - मुक्तिबोध-काव्य में जनवादी चेतना

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - भारद्वाज, मैथिलीप्रसाद

वर्ष - 1994

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **4** खंडों के अंतर्गत **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **418** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **3** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में मुक्तिबोध के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में जनवादी चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय खंड में **4** अध्याय हैं। चतुर्थ अध्याय में नई कविता, जनवादी चेतना और मुक्तिबोध-काव्य की चर्चा की गई है। पंचम अध्याय में मुक्तिबोध-काव्य में जनवादी चेतना और उसके विविध संदर्भों का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में मुक्तिबोध-काव्य के लक्ष्य और उद्देश्यों का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में मुक्तिबोध-काव्य के शिल्प पक्ष की चर्चा की गई है। तृतीय खंड में अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। चतुर्थ खंड में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम उचित क्रम में हैं। विषय-सूची एवं अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत मिलते हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। विराम चिह्नों की त्रुटियां रह गई हैं। प्रबंध का टंकण सामान्य स्तर का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

9. शोधार्थी - शर्मा, ऋषिपाल

शोध-विषय - धूमिल के काव्य में व्यवस्था-चित्रण

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - सिंहल, बैजनाथ

वर्ष - 1994

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **264** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में धूमिल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में व्यवस्था-चित्रण का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में धूमिल के काव्य के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक व्यवस्था का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में आर्थिक व्यवस्था का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में राजनीतिक व्यवस्था का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में सांस्कृतिक व्यवस्था का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन प्राक्कथन से प्रारम्भ कर लिया गया है। पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत हैं। संदर्भ-सूची में आकारादिक्रम का पालन नहीं किया गया है। प्रबंध की भाषा सरल है। कहीं-कहीं मात्रा व विराम चिह्नों संबंधी अशुद्धियां मिलती हैं। प्रबंध का टंकण कार्य सामान्य स्तर का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

10. शोधार्थी - सिंह, प्रमोद

शोध-विषय - दुष्यंत का काव्य ः वस्तु और शिल्प

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - शर्मा, गौतम

वर्ष - 1994

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **398** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में दुष्यंत के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में आधुनिक कविता के परिप्रेक्ष्य में वस्तु और शिल्प का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में दुष्यंत के काव्य के परिप्रेक्ष्य में वस्तु-चयन का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में दुष्यंत के काव्य के परिप्रेक्ष्य में शिल्प-विधान का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में हिन्दी गज़ल साहित्य के परिप्रेक्ष्य में दुष्यंत का स्थान निर्धारित किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत अनुपस्थित हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा, विराम चिह्न व वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सजग रहा है। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी उत्तम हैं।

11. शोधार्थी - बाला, कुसुम

शोध-विषय - द्वारका प्रसाद मिश्र कृत 'कृष्णायन' का मिथकीय आयाम

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - तनेजा, विनोद कुमार

वर्ष - 1995

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **460** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में द्वारका प्रसाद मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ, मिथक का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में कृष्णायन में मिथिक वैविध्य के परिप्रेक्ष्य में कथा-संरचनात्मक विश्लेषण किया गया है। तृतीय अध्याय में कृष्णायन में मिथक-मनोविज्ञान के

परिप्रेक्ष्य में पात्र-परिकल्पना का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में कृष्णायन में मिथकीय अन्तर्वस्तु के परिप्रेक्ष्य में समाज-सांस्कृतिक एवं दार्शनिक अनुशीलन का उल्लेख किया गया है। पंचम अध्याय में कृष्णायन के रूप-तंत्र के परिप्रेक्ष्य में भाषा-शैलीपरक विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में कृष्णायन के परिप्रेक्ष्य में मिथकीय प्रयोग का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के सर्वथा प्रतिकूल है। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध का टंकण कार्य ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

12. शोधार्थी - यशवन्ती

शोध-विषय - भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य का शैली-वैज्ञानिक अध्ययन

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - वेदालंकार, विजय कुमार

वर्ष - 1996

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **277** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में शैली-विज्ञान का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में मिश्र के काव्य के परिप्रेक्ष्य में चयन का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में विचलन का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में समानान्तरता का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में अप्रस्तुत-विधान का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेतों का उल्लेख नहीं किया गया है। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां रह गई हैं। प्रबंध का टंकण सामान्य स्तर का है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

13. शोधार्थी - कुमारी, राजेश

शोध-विषय - नरेश मेहता के काव्य में अभिव्यक्त मूल्य

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - सारस्वत, ओम् प्रकाश

वर्ष - 1997

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **359** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नरेश मेहता के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में मूल्यों का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में मेहता के काव्य के परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक मूल्यों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में सामाजिक मूल्यों का उल्लेख किया गया है। पंचम अध्याय में राजनीतिक मूल्यों का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में दार्शनिक मूल्यों का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में अन्य मूल्यों का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रात्मक त्रुटियां व वर्तनी के प्रयोग की अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध-टंकण अस्पष्ट है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

14. शोधार्थी - भनीट, ऋतु

शोध-विषय - श्री नरेश मेहता के काव्य बिम्ब-विधान का विश्लेषण

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - शर्मा, लक्ष्मीनारायण

वर्ष - 1997

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **289** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में काव्यगत बिम्ब-विधान का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में श्री नरेश मेहता के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में मेहता के काव्य संग्रहों के परिप्रेक्ष्य में बिम्ब-विधान की चर्चा की गई है। चतुर्थ अध्याय में मेहता के प्रबंध काव्य के परिप्रेक्ष्य में बिम्ब-विधान का उल्लेख किया गया है। पंचम अध्याय में मेहता के बिम्ब-विधान के परिप्रेक्ष्य में शब्द-सौष्ठव एवं भाषागत लालित्य का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार तथा सहायक ग्रंथ-सूची गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

15. शोधार्थी - घेज़टा, अम्बिका

शोध-विषय - साठोत्तरी हिन्दी कविता के संदर्भ में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का काव्य

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - कुमार, कृष्ण

वर्ष - 1998

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **358** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में साठोत्तरी हिन्दी कविता का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में सक्सेना के काव्य के परिप्रेक्ष्य में जीवन-दृष्टि का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में साठोत्तरी हिन्दी कविता के संदर्भ में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के काव्य का आंकलन किया गया

है। पंचम अध्याय में सक्सेना के काव्य के परिप्रेक्ष्य में अभिव्यंजना कौशल का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा पृष्ठांकन सही हैं। अध्याय व्यवस्थित है। पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेतों का उल्लेख नहीं मिलता। प्रबंध की भाषा सुगम है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सजग रही है। टंकण-कार्य उत्तम तथा सुपाठ्य है, जिल्दबंदी अच्छी है।

16. शोधार्थी - शर्मा, मस्त राम

शोध-विषय - शमशेर का काव्य ः संवेदना और शिल्प

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - भल्ला, सरस्वती

वर्ष - 1998

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **282** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में शमशेर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में संवेदना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में शिल्प का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में शमशेर के काव्य के परिप्रेक्ष्य में संवेदना का उल्लेख किया गया है। षष्ठ अध्याय में शमशेर के काव्य के परिप्रेक्ष्य में शिल्प का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेत उपलब्ध नहीं हैं। प्रबंध की भाषा संयत तथा स्पष्ट है। वर्तनी तथा मात्रा संबंधी

अशुद्धियां कम हैं। परिशिष्ट में आकारादि नियम का पालन नहीं किया गया है। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी सामान्य हैं।

17. शोधार्थी - कटोच, सुनीता

शोध-विषय - साहिब सिंह मृगेन्द्र के काव्य का सौन्दर्यपरक अध्ययन

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - सिंगल, रामधारी

वर्ष - 1999

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **9** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **398** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में सौन्दर्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में साहिब सिंह मृगेन्द्र के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं तद्युगीन परिवेश का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में साहिब सिंह मृगेन्द्र के काव्य के परिप्रेक्ष्य में कायिक सौन्दर्य का चित्रण किया गया है। पंचम अध्याय में साहिब सिंह मृगेन्द्र के काव्य के परिप्रेक्ष्य में भाव-सौन्दर्य का निरूपण किया गया है। षष्ठ अध्याय में साहिब सिंह मृगेन्द्र के काव्य के परिप्रेक्ष्य में प्रकृतिगत सौन्दर्य का निरूपण किया गया है। सप्तम अध्याय में अलंकार एवं छंद-योजना के परिप्रेक्ष्य में साहिब सिंह मृगेन्द्र के काव्य शिल्प-सौन्दर्य का विवेचन किया गया है। अष्टम अध्याय में साहिब सिंह मृगेन्द्र के काव्य के परिप्रेक्ष्य में बिम्बात्मक एवं भाषिक सौन्दर्य की चर्चा की गई है। नवम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। विषय-सूची में पृष्ठ संख्या का विवरण नहीं दिया गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

18. शोधार्थी - कुमार, प्रदीप

शोध-विषय - दुष्यन्त का काव्य ः कथ्य एवं शिल्प

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - कुमार, कृष्ण

वर्ष - 1999

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **434** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में कथ्य एवं शिल्प का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में दुष्यंत कुमार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में दुष्यंत के काव्य के परिप्रेक्ष्य में जीवन-दृष्टि का चित्रण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में साठोत्तरी कविता के संदर्भ में दुष्यंत के काव्य का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में दुष्यंत के काव्य के परिप्रेक्ष्य में शिल्प का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। प्रबंध-लेखन में त्रुटियां है। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। भाषागत व वर्तनी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

19. शोधार्थी - कुमारी, मीरा

शोध-विषय - अनन्य अली का काव्य ः वस्तु एवं शिल्प

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - शर्मा, राममूर्ति

वर्ष - 1999

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **302** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित

की गई है। प्रथम अध्याय में वस्तु एवं शिल्प का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में अनन्य अली के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में अनन्य अली के काव्य के परिप्रेक्ष्य में काव्य-विषय का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में अनन्य अली के काव्य के परिप्रेक्ष्य में काव्य-शिल्प का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में अनन्य अली के काव्य के परिप्रेक्ष्य में ब्रज-संस्कृति का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची सही है। अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा-शैली स्पष्ट है। मात्रात्मक अशुद्धियां कम हैं। टंकण धूमिल एवं जिल्दबंदी मजबूत हैं।

20. शोधार्थी - अवस्थी, संदीप

शोध-विषय - कुंवर नारायण के काव्य में सांस्कृतिक चेतना

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - सारस्वत, ओम् प्रकाश

वर्ष - 2000

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **255** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नारायण के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में सांस्कृतिक चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में नारायण के काव्य के परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक चेतना के विविध (आंतरिक) पक्षों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में सांस्कृतिक चेतना के अन्य (बाहरी एवं अस्वीकार्य) पक्षों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में नारायण के खण्ड एवं खण्डेत्तर काव्यों के परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक चेतना का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में नारायण के काव्य के परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक चेतना के अन्य पक्षों का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में शिल्पगत चेतना का विवेचन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अनुच्छेदों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। संदर्भ -सूची पुस्तकानुक्रम में है। प्रबंध की भाषा स्पष्ट, शैली प्रवाहपूर्ण है। अशुद्धियां अल्प हैं एवं टंकण अच्छा है। जिल्दबंदी सशक्त है।

21. शोधार्थी - कुमार, सुनील

शोध-विषय - अज्ञेय के काव्य में मानव-मूल्य

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - मेहता, रामनाथ

वर्ष - 2000

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **297** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में अज्ञेय के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में मानव-मूल्य एवं काव्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में अज्ञेय के काव्य के परिप्रेक्ष्य में आध्यात्मिक मूल्यों का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में दार्शनिक मूल्यों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में सांस्कृतिक मूल्यों का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में कला एवं सौन्दर्यगत मूल्यों का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में सामाजिक एवं आर्थिक मूल्यों का चित्रण किया गया है। अष्टम अध्याय में वैज्ञानिक एवं यांत्रिक मूल्यों का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी क्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा संयत है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

22. शोधार्थी - नरवाल, दलबीर सिंह

शोध-विषय - उदयभानु हंस का काव्य ः संवेदना और शिल्प

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - मिश्र, नरेश

वर्ष - 2000

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **250** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संवेदना और शिल्प के सैद्धान्तिक विवेचन के साथ, हंस के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में हंस के काव्य के परिप्रेक्ष्य में सामाजिकता का उल्लेख किया गया है। तृतीय अध्याय में राष्ट्रीयता का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में सांस्कृतिक भावना का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में हंस के काव्य के परिप्रेक्ष्य में शिल्प-संरचना का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा व विराम-चिह्नों की अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क नहीं रहा है। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

23. शोधार्थी - शर्मा, राजेश्वरी

शोध-विषय - अज्ञेय के काव्य में प्रेम और सौन्दर्य

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - रैणा, कृष्णा

वर्ष - 2000

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **257** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में प्रेम और सौन्दर्य के सैद्धान्तिक विवेचन के साथ, अज्ञेय के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में नई कविता के परिप्रेक्ष्य में अज्ञेय के काव्य का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में अज्ञेय से पूर्व हिन्दी कविता के परिप्रेक्ष्य में प्रेम और सौन्दर्य का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में अज्ञेय के काव्य के परिप्रेक्ष्य में प्रेम-भावना का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में सौन्दर्य-भावना का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेतों का पालन किया गया है। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध का टंकण कार्य ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

24. शोधार्थी - कुमार, सन्तोष

शोध-विषय - साठोत्तरी हिन्दी कविता के संदर्भ में कुमार विकल का काव्य

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - कुमार, कृष्ण

वर्ष - **2001**

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **274** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में साठोत्तरी हिन्दी कविता का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में कुमार विकल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में

कुमार विकल के काव्य के परिप्रेक्ष्य में जीवन-दृष्टि का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में साठोत्तरी हिन्दी कविता के परिप्रेक्ष्य में कुमार विकल के काव्य का मूल्यांकन किया गया है। पंचम अध्याय में कुमार विकल के अभिव्यंजना कौशल का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक व उपशीर्षक दिए गए हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

25. शोधार्थी - देवी, पुष्पा

शोध-विषय - हरिशंकर 'आदेश' के काव्य में प्रेम और सौन्दर्य-चित्रण

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - मिश्र, नरेश

वर्ष - 2001

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **4** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **295** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में प्रेम और सौन्दर्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में आदेश के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में आदेश के काव्य के परिप्रेक्ष्य में प्रेम का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में आदेश के काव्य के परिप्रेक्ष्य में सौन्दर्य का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं।

पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा प्रभावशाली है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

26. शोधार्थी - मलिक, सुधीर

शोध-विषय - कुंवर नारायण के काव्य में परम्परा और प्रयोग

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - राधाकृष्ण

वर्ष - 2001

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **300** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नारायण के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में परम्परा का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में प्रयोग का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में नई कविता के परिप्रेक्ष्य में परम्परा और प्रयोग का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में नारायण के काव्य के परिप्रेक्ष्य में परम्परा और प्रयोग का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में नारायण के नाट्य-काव्य 'आत्मजयी' के परिप्रेक्ष्य में परम्परा और प्रयोग का चित्रण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम व्यतिक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण सही हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक दिए गए हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उच्च स्तर का है तथा जिल्दबंदी ठीक है।

27. शोधार्थी - राम, धनी

शोध-विषय - साठोत्तरी हिन्दी कविता के संदर्भ में लीलाधर जगूड़ी का काव्य

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - कुमार, कृष्ण

वर्ष - 2001

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **449** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में साठोत्तरी हिन्दी कविता का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में लीलाधर जगूड़ी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में लीलाधर जगूड़ी के काव्य में व्यक्त जीवन-दृष्टि का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में लीलाधर जगूड़ी के काव्य का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में लीलाधर जगूड़ी के काव्य के परिप्रेक्ष्य में अभिव्यंजना-कौशल का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची सही है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत उपलब्ध हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क नहीं रहा है। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

28. शोधार्थी - कुमार, राजीव

शोध-विषय - जगदीश गुप्त की काव्य-चेतना

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - शर्मा, सत्यनारायण

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **345** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में काव्य-चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में गुप्त के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं तद्युगीन परिवेश का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में गुप्त की काव्य-चेतना के परिप्रेक्ष्य में भाव पक्ष का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में विचार पक्ष का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में शिल्प पक्ष का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ व्यतिक्रम में है। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा, विराम चिह्न तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य सामान्य स्तर का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

29. शोधार्थी - कुमारी, सुनीता

शोध-विषय - नरेश मेहता के काव्य का सांस्कृतिक मूल्यांकन

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - राजपाल, हुकुमचंद

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **235** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में सांस्कृतिक निरूपण के साथ, नरेश मेहता के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में मेहता के काव्य के परिप्रेक्ष्य में मिथक का उल्लेख किया गया है। तृतीय अध्याय में प्रकृति का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में राजनैतिक

परिप्रेक्ष्य में मेहता के काव्य का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में मानव-मूल्यों का उल्लेख किया गया है। षष्ठ अध्याय में दार्शनिकता के परिप्रेक्ष्य में मेहता के काव्य का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा, विराम चिह्न व वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी उत्तम हैं।

30. शोधार्थी - कौर, कुलदीप

शोध-विषय - बलदेव वंशी के काव्य में सामाजिक यथार्थ

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - राजपाल, हुकुमचंद

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **230** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में सामाजिक यथार्थ का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में बलदेव वंशी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में सामाजिक आयाम के परिप्रेक्ष्य में बलदेव वंशी के काव्य का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में आर्थिक आयाम के परिप्रेक्ष्य में बलदेव वंशी के काव्य का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में बलदेव वंशी के काव्य के परिप्रेक्ष्य में राजनीतिक आयाम का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में सांस्कृतिक आयाम का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा व विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उत्तम है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

31. शोधार्थी - खटक, सन्तोष

शोध-विषय - डॉ. बलदेव वंशी के काव्य में सामाजिक चेतना

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - गौड़, पूर्णमल

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **382** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में सामाजिक चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में वंशी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में वंशी के काव्य के परिप्रेक्ष्य में समाजाध्यात्म चेतना का चित्रण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में अंतर अनुशासनीक आयामों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में सृजन-भाषा और विचारों का सामाजिक चेतना के संदर्भ में अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में वंशी की लम्बी कविताओं एवं मिथक-काव्य के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक चेतना का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम शीर्षक के नीचे मध्य में दिए गए हैं। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सजग रही है। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

32. शोधार्थी - चन्द, सुभाष

शोध-विषय - औदात्त्य सिद्धान्त की दृष्टि से श्री रघुवीर शरण 'मिश्र' के प्रबंध काव्यों का विश्लेषण

('जननायक' और 'मानवेन्द्र' के संदर्भ में)

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - तिवारी, शैल कुमारी

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **354** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में औदात्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में मिश्र के काव्य के परिप्रेक्ष्य में भावगत औदात्य का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में विचारगत औदात्य का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में चरित्रगत औदात्य का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में अभिव्यंजनागत औदात्य का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची एवं अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत मिलते हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। विराम चिह्नों की अल्प त्रुटियां रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उच्च स्तरीय है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

33. शोधार्थी - चिब, बिन्दु

शोध-विषय - नरेश मेहता के काव्य में युगबोध

विश्वविद्यालय - जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

निर्देशक - शर्मा, परमेश्वरी

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **246** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नरेश मेहता के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में युगबोध का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में नरेश मेहता के काव्य के परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति केन्द्रित दृष्टि और तद्जनित समस्याओं का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में राष्ट्रीयता के परिप्रेक्ष्य में मेहता के काव्य का उल्लेख किया गया है। पंचम अध्याय में व्यापक मानवीय संदर्भ में मेहता के काव्य का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी क्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत उपलब्ध नहीं हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य ठीक है तथा जिल्दबंदी सामान्य है।

34. शोधार्थी - राम, लायक

शोध-विषय - साठोत्तरी हिन्दी कविता के संदर्भ में विश्वनाथ प्रसाद तिवारी का काव्य

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - कुमार, कृष्ण

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **310** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में साठोत्तरी हिन्दी कविता का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में तिवारी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में तिवारी के काव्य के परिप्रेक्ष्य में जीवन-दृष्टि का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में साठोत्तरी हिन्दी कविता के परिप्रेक्ष्य में तिवारी के काव्य का मूल्यांकन किया गया है। पंचम अध्याय में अभिव्यंजना

कौशल का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

35. शोधार्थी - सिंह, कपूर

शोध-विषय - औदात्य सिद्धान्त की दृष्टि से रत्नचन्द्र शर्मा के काव्य का विश्लेषण

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - गुप्त, रमेश चन्द्र

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **318** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में औदात्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में रत्नचन्द्र शर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में शर्मा के काव्य के परिप्रेक्ष्य में भावगत औदात्य का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में विचारगत औदात्य का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में चरित्रगत औदात्य का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में शिल्पगत औदात्य का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में अभिव्यक्तिगत औदात्य का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी क्रम में हैं। वर्ष का उल्लेख नहीं किया गया है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य अस्पष्ट है तथा जिल्दबंदी सामान्य है।

36. शोधार्थी - गर्ग, ईश्वर चन्द

शोध-विषय - किशोर काबरा और उनका काव्य

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - यादव, रामपत

वर्ष - 2004

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **443** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में काबरा के व्यक्तित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में काबरा के कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में काबरा के काव्य का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में संवेदना और शिल्प के परिप्रेक्ष्य में इनके महाकाव्यों का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में संवेदना और शिल्प के परिप्रेक्ष्य में इनके खण्ड काव्यों का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में 'किशोर सतसई' का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में मुक्तक काव्य के परिप्रेक्ष्य में संवेदना और शिल्प का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन सही है। पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेतों का पालन किया गया है। प्रबंध की भाषा सरल, शैली सुगठित है। मात्रा एवं विराम चिह्नों का शुद्ध प्रयोग दृष्टिगत होता है। प्रबंध का टंकण एवं जिल्दबंदी उत्तम हैं।

37. शोधार्थी - चन्द, सुभाष

शोध-विषय - बलदेव वंशी का काव्य ः कथ्य एवं शिल्प

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - लाल, मदन

वर्ष - 2004

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **366** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में कथ्य एवं शिल्प का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में वंशी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में कथ्य के परिप्रेक्ष्य में वंशी के काव्य का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में शिल्प के परिप्रेक्ष्य में वंशी के काव्य का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में शोध-विषय का सार, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेतों का उल्लेख नहीं किया गया है। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां रह गई हैं। प्रबंध का टंकण सामान्य स्तर का है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

38. शोधार्थी - लीमचंद

शोध-विषय - मंगलेश डबराल का काव्य ः संवेदना और शिल्प

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - भल्ला, सरस्वती

वर्ष - 2004

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **294** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में डबराल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में संवेदना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में शिल्प का सैद्धान्तिक विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में डबराल के काव्य के परिप्रेक्ष्य में संवेदना का उल्लेख किया गया है। षष्ठ अध्याय में डबराल के काव्य के परिप्रेक्ष्य में शिल्प का अध्ययन किया

गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। कहीं-कहीं मात्रा व विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां मिलती हैं। प्रबंध का टंकण कार्य ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

39. शोधार्थी - सविता

शोध-विषय - सप्तशती परम्परा और पो. हरिशंकर 'आदेश' का समकालीन बोध

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - मिश्र, नरेश

वर्ष - 2004

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **398** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हरिशंकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में आदेश की सप्तशती के परिप्रेक्ष्य में भक्ति भावना का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में नीति का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में प्रेम का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में सौन्दर्य का चित्रण किया गया है। षष्ठ अध्याय में आधुनिक-बोध का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सजग नहीं रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

40. शोधार्थी - काजला, सुमन

शोध-विषय - बलदेव वंशी के काव्य में सांस्कृतिक चेतना

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - ढल, प्रीतम लाल

वर्ष - 2005

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **445** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में बलदेव वंशी के व्यक्तित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में वंशी के कृतित्व का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में सांस्कृतिक चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में नैतिक, धार्मिक और दार्शनिक आयामों के परिप्रेक्ष्य में वंशी के काव्य में सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में आध्यात्मिक आयाम के परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक चेतना का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में राजनीतिक आयाम का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में सामाजिक आयाम के परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रात्मक त्रुटियां व वर्तनी के प्रयोग की अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध-टंकण सुन्दर है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

41. शोधार्थी - कुमार, प्रमोद

शोध-विषय - महेन्द्र भटनागर के काव्य में संवेदना के विविध आयाम

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - शर्मा, जयप्रकाश

वर्ष - 2005

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **220** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संवेदना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में भटनागर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में भटनागर की काव्य-संवेदना के परिप्रेक्ष्य में प्रगतिवादी काव्य का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में युगीन संदर्भ में भटनागर की काव्य-संवेदना का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में प्रेम और प्रकृति का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा पृष्ठांकन सही हैं। अध्याय व्यवस्थित है। पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेतों का उल्लेख है। प्रबंध की भाषा सुगम है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सजग रहा है। टंकण-कार्य उत्तम तथा सुपाठ्य है, जिल्दबंदी अच्छी है।

42. शोधार्थी - कुमार, रमेश

शोध-विषय - उदयभानु हंस के काव्य में प्रेम और सौन्दर्य

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - सिंह, राजेन्द्र

वर्ष - 2005

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **4** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **278** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में प्रेम और सौन्दर्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हंस के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में हंस के काव्य के परिप्रेक्ष्य में प्रेम की व्यंजना की गई है। चतुर्थ अध्याय में हंस के काव्य के परिप्रेक्ष्य में सौन्दर्य का निरूपण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा संयत तथा स्पष्ट है। वर्तनी तथा मात्रा संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी उत्तम हैं।

43. शोधार्थी - जयपाल

शोध-विषय - धूमिल की कविता में मोहभंग और विकल्प

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - परेश

वर्ष - 2005

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **4** खण्डों के अंतर्गत **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **334** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **3** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में धूमिल के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं तद्युगीन परिवेश का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में युग-परिवेश के परिप्रेक्ष्य में उस समय की परिस्थितियों का अध्ययन किया गया है। द्वितीय खंड में **3** अध्याय हैं। चतुर्थ अध्याय में मोहभंग के सैद्धान्तिक विवेचन के साथ, धूमिल की कविता में मोहभंग के स्वरूप का भी अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में धूमिल की कविता के परिप्रेक्ष्य में मोहभंग का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में मोहभंग के परिप्रेक्ष्य में धूमिल के काव्य के अभिव्यक्ति पक्ष का विश्लेषण किया गया है। तृतीय खंड में सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। चतुर्थ खंड में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क नहीं रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

44. शोधार्थी - प्रकाश, वेद

शोध-विषय - ब्रह्मदत्त वाग्मि के काव्य में संस्कृति एवं दर्शन

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - यादव, रामपत

वर्ष - 2005

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **331** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में काव्य-परम्परा के आधार पर हरियाणा का अध्ययन किया गया है। द्वितीय अध्याय में ब्रह्मदत्त के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में संवेदना एवं शिल्प के आधार पर ब्रह्मदत्त के काव्य का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में संस्कृति का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में ब्रह्मदत्त के काव्य के परिप्रेक्ष्य में संस्कृति के विविध आयामों का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में दर्शन का तात्त्विक अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में ब्रह्मदत्त के काव्य के परिप्रेक्ष्य में दर्शन के विविध आयामों का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ व्यतिक्रम में है। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा, विराम चिह्न तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उच्च स्तर का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

45. शोधार्थी - शर्मा, सरोत्तम

शोध-विषय - सारस्वत मोहन 'मनीषी' और उनकी काव्य साधना

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - यादव, रामपत

वर्ष - 2005

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **376** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में मोहन के बहुआयामी व्यक्तित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में मोहन के कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में संवेदना के विविध आयामों के परिप्रेक्ष्य में मनीषी के गीत व मुक्तक काव्य का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में मनीषी के काव्य के परिप्रेक्ष्य में शिल्प के विविध आयामों का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में संवेदना और शिल्प के परिप्रेक्ष्य में 'बूंद-बूंद वेदना' का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में 'एक हकीकत और' का विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में 'वामन विराट' का उल्लेख किया गया है। अष्टम अध्याय में 'मनीषी सतसई' का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा व विराम-चिह्नों की अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क नहीं रहा है। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी उत्तम कोटि के हैं।

46. शोधार्थी - सांगवान, माया देवी

शोध-विषय - धर्मवीर भारती के काव्य में अनुभूति और अभिव्यक्ति

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - पाण्डेय, रामसजन

वर्ष - 2005

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **535** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में अनुभूति और अभिव्यक्ति का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में भारती के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में अनुभूति और अभिव्यक्ति के परिप्रेक्ष्य में भारती की मुक्तक कविताओं का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में अनुभूति और अभिव्यक्ति के परिप्रेक्ष्य में 'अंधायुग' का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में 'कनुप्रिया' का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। अध्यायों के समक्ष पृष्ठांकन नहीं किया गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध का टंकण कार्य ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

47. शोधार्थी - कौर, सुरजीत

शोध-विषय - सुरेश चन्द्र वात्सयायन का हिन्दी काव्य को योगदान

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - बेदी, हरमहेन्द्र सिंह

वर्ष - 2006

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **549** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में सुरेश चन्द्र वात्सयायन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में इनके काव्य का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में सुरेश के काव्य के परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति की मूल-संवेदनाओं का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में सुरेश के काव्य के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक चेतना

का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में पंजाब की समकालीन कविता के परिप्रेक्ष्य में उनके काव्य का मूल्यांकन किया गया है। षष्ठ अध्याय में आधुनिक हिन्दी काव्य में इनका स्थान निर्धारित किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा प्रभावशाली है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

48. शोधार्थी - कौशिक, कामना

शोध-विषय - डॉ. जगदीश गुप्त के काव्य में युगबोध

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - सिंह, राजेन्द्र

वर्ष - 2006

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **327** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में युगबोध का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में गुप्त के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में युगबोध के परिप्रेक्ष्य में गुप्त-काव्य की सामाजिक चेतना का चित्रण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में राजनीतिक चेतना का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में युगबोध के परिप्रेक्ष्य में गुप्त काव्य की आर्थिक, प्राकृतिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक चेतना का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में युगबोध के परिप्रेक्ष्य में गुप्त-काव्य का मूल्यांकन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

49. शोधार्थी - प्रभा, शशि

शोध-विषय - नरेश मेहता के काव्य में मिथक

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - आर्य, ओमपाल

वर्ष - 2006

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **274** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नरेश मेहता के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में मिथक का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में नरेश कृत आख्यान काव्यों का विशिष्ट परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में नरेश-काव्य के परिप्रेक्ष्य में मिथक का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में मिथकीय काव्यों के काव्य-सौष्ठव का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में नरेश मेहता के काव्य की समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची सही है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत उपलब्ध नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क नहीं रही है। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

50. शोधार्थी - सांगवान, मंजु

शोध-विषय - नरेश मेहता का काव्य ः युगबोध के आयाम

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - पाण्डेय, रामसजन

वर्ष - 2006

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **224** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में युगबोध का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में नरेश मेहता के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में मेहता के काव्य में युगबोध के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक आयाम का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में राजनीतिक आयाम का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक आयाम का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक सही है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम व्यतिक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां बहुत कम हैं। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी अच्छी है।

51. शोधार्थी - सिंह, कुलवंत

शोध-विषय - रघुवीर सहाय 'मिश्र' के महाकाव्यों का शैली वैज्ञानिक अध्ययन

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - शर्मा, वेदव्रत

वर्ष - 2006

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **9** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **291** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में शैली-विज्ञान का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में 'वीरायन', 'मानवेन्द्र' तथा 'जननायक' महाकाव्यों के परिप्रेक्ष्य में चयन-प्रक्रिया का चित्रण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में विवेच्य महाकाव्यों के परिप्रेक्ष्य में विचलन का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में अप्रस्तुत-विधान का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में समानान्तरता का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में विपथन का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में विरलन का अध्ययन किया गया है। नवम अध्याय में प्रोक्ति का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम व्यतिक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत उपलब्ध हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

52. शोधार्थी - तंवर, बबीता

शोध-विषय - उदयभानु हंस के काव्य में जीवन-मूल्य

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - शर्मा, पूर्णचन्द

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **242** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में जीवन-मूल्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हंस के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में हंस के काव्य के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक जीवन-मूल्यों का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में राजनीतिक जीवन-

मूल्यों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में सांस्कृतिक जीवन-मूल्यों का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में हंस के काव्य के परिप्रेक्ष्य में अन्य जीवन-मूल्यों का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम शीर्षक के नीचे निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण सही हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक दिए गए हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य सामान्य स्तर का है तथा जिल्दबंदी ठीक है।

53. शोधार्थी - शर्मा, सरोजिनी

शोध-विषय - देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' के काव्य में व्यक्त सांस्कृतिक चेतना

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - शर्मा, नंदकिशोर

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **383** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में सांस्कृतिक चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में इन्द्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में इन्द्र के काव्य के परिप्रेक्ष्य में पारिवारिक एवं सामाजिक चेतना का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में राजनीतिक एवं आर्थिक चेतना का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में धार्मिक, दार्शनिक एवं नैतिक चेतना का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में सौन्दर्य-चेतना का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक व उपशीर्षक दिए गए हैं। उपसंहार में शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध-टंकण ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

54. शोधार्थी - शर्मा, अनुराधा

शोध-विषय - राधेश्याम शुक्ल की कविता में अनुभूति और अभिव्यंजना

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - पाण्डेय, रामसजन

वर्ष - 2008

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **240** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में अनुभूति और अभिव्यंजना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में शुक्ल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में शुक्ल के नवगीतों के परिप्रेक्ष्य में अनुभूति के विविध आयामों का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में शुक्ल के दोहा साहित्य के परिप्रेक्ष्य में अनुभूति के विविध आयामों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में शुक्ल की कविता के परिप्रेक्ष्य में अभिव्यंजना के विविध आयामों का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी उत्तम हैं।

55. शोधार्थी - शर्मा, सोनिया

शोध-विषय - कुमार विकल के काव्य का शैलीवैज्ञानिक अध्ययन

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - सेठी, नीलम

वर्ष - 2008

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **503** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में कुमार विकल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ, शैलीविज्ञान का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में शैलीविज्ञान आलोचना के प्रतिमानों का उल्लेख किया गया है। तृतीय अध्याय में अग्रप्रस्तुति प्रतिमानों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में कुमार विकल के काव्य-संग्रहों का विचलनमूलक विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में विपथनमूलक के परिप्रेक्ष्य में कुमार विकल के काव्य का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में समान्तरतामूलक के परिप्रेक्ष्य में कुमार विकल के काव्य का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में विरलतामूलक के परिप्रेक्ष्य में कुमार विकल के काव्य का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। पृष्ठांकन की गणना विषयानुक्रमणिका से कर ली गई है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

56. शोधार्थी - नरेन्द्र

शोध-विषय - प्रो. हरिशंकर 'आदेश' की काव्य-भाषा का अनुशीलन

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - मिश्र, नरेश

वर्ष - 2009

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **291** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में आदेश के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ, काव्य-भाषा का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में आदेश के काव्य के परिप्रेक्ष्य में ध्वनि-योजना का उल्लेख किया गया है। तृतीय अध्याय में शब्द-योजना का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में आदेश के काव्य की व्याकरणिक विवेचना की गई है। पंचम अध्याय में आदेश के काव्य के परिप्रेक्ष्य में भावाभिव्यक्ति उपादानों का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम शीर्षक के नीचे मध्य में दिए गए हैं। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सजग रहा है। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

57. शोधार्थी - पाल, जितेन्द्र

शोध-विषय - सर्वेश्वर के काव्य में संघर्ष-चेतना

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - सिवाच, विद्या

वर्ष - 2009

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **275** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संघर्ष-चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में सर्वेश्वर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में सर्वेश्वर के काव्य के परिप्रेक्ष्य में संघर्ष-चेतना का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में सामाजिक संघर्ष का अध्ययन

किया गया है। पंचम अध्याय में राजनीतिक संघर्ष का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में आर्थिक संघर्ष का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा व विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उत्तम है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

58. शोधार्थी - प्रेमचंद

शोध-विषय - रामेश्वर 'क ण' के काव्य में गांधीवादी चेतना

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - आर्य, ओमप्रकाश

वर्ष - 2009

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **307** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में रामेश्वर 'क ण' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में गांधीवादी चेतना का तात्त्विक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में रामेश्वर 'क ण' के काव्य में गांधीवादी चेतना के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक पक्ष का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में आर्थिक पक्ष का चित्रण किया गया है। पंचम अध्याय में धार्मिक एवं नैतिक पक्ष का उल्लेख किया गया है। षष्ठ अध्याय में राजनीतिक एवं राष्ट्रीय पक्ष का विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम शीर्षक के नीचे मध्य में दिए गए हैं। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में

उपशीर्षक रेखांकित हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उत्तम है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

59. शोधार्थी - महासिंह

शोध-विषय - श्रीकांत वर्मा का काव्य ः संवेदना और शिल्प

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - पाण्डेय, रामसजन

वर्ष - 2009

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **255** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संवेदना और शिल्प का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में वर्मा के काव्य के परिप्रेक्ष्य में संवेदना के विविध रूपों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में राजनीति और प्रकृति संबंधी संवेदना का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में वर्मा के काव्य के परिप्रेक्ष्य में शिल्प-विधान का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य सुन्दर है तथा जिल्दबंदी ठीक है।

60. शोधार्थी - राखी

शोध-विषय - प्रो. हरिशंकर 'आदेश' के 'शकुन्तला' महाकाव्य का काव्यशास्त्रीय अध्ययन

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - मिश्र, नरेश

वर्ष - 2009

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **262** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में आदेश के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में शकुन्तला महाकाव्य के काव्यशास्त्रीय अध्ययन का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में शकुन्तला महाकाव्य का रस शास्त्रीय अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में शकुन्तला महाकाव्य का ध्वनि शास्त्रीय विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में शकुन्तला महाकाव्य का अलंकार शास्त्रीय अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में शकुन्तला महाकाव्य का वक्रोक्ति शास्त्रीय विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य सुन्दर है तथा जिल्दबंदी ठीक है।

61. शोधार्थी - शर्मा, वन्दना

शोध-विषय - भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य में प्रकृति-चित्रण

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - शर्मा, सत्यनारायण

वर्ष - 2009

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **238** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में प्रकृति का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय एवं चतुर्थ अध्याय में मिश्र के काव्य के परिप्रेक्ष्य में प्रकृति का चित्रण किया गया है। पंचम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमानुसार है। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा, विराम चिह्न तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उत्तम है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

62. शोधार्थी - सैनी, स्नेह लता

शोध-विषय - उदयभानु 'हंस' की काव्य-भाषा का अनुशीलन

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - मिश्र, नरेश

वर्ष - 2009

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **288** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हंस के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ, काव्य-भाषा का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हंस के काव्य के परिप्रेक्ष्य में स्वनगत स्वरूप का उल्लेख किया गया है। तृतीय अध्याय में शब्दगत स्वरूप का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में पदगत स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में वाक्य-रचनागत स्वरूप एवं भावाभिव्यक्ति के अन्य उपादानों का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

63. शोधार्थी - जयचंद

शोध-विषय - समकालीन हिन्दी कविता के संदर्भ में कुमार कृष्ण का काव्य

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - शर्मा, शेखर

वर्ष - 2010

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **462** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में समकालीन हिन्दी कविता का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में कुमार कृष्ण के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में कृष्ण के काव्यात्मक विकास का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में कृष्ण के काव्य में व्यक्त जीवन-दृष्टि का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में समकालीन हिन्दी कविता के संदर्भ में कुमार कृष्ण के काव्य का मूल्यांकन किया गया है। षष्ठ अध्याय में कृष्ण के अभिव्यंजना कौशल का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सजग नहीं रहा है। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी उत्तम हैं।

64. शोधार्थी - रीतू

शोध-विषय - उपेन्द्रनाथ अश्क के काव्य का आलोचनात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - बाठ, सुखविंदर कौर

वर्ष - 2010

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **224** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में अश्क के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में आधुनिक हिन्दी काव्य में अश्क का स्थान निर्धारित किया गया है। तृतीय अध्याय में मनोवैज्ञानिक धरातल पर अश्क के काव्य का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में अश्क के काव्य के सामाजिक पक्ष का उल्लेख किया गया है। पंचम अध्याय में कलात्मक पक्ष के परिप्रेक्ष्य में अश्क के काव्य का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक व उपशीर्षक दिए गए हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध-टंकण ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

विवेच्य विश्वविद्यालयों में प्रयोगवाद, नई कविता एवं स्वातंत्र्योत्तर काव्य संबंधी **64** शोध-विषयों पर शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक में **21** शोध-विषयों पर, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में **15** शोध-विषयों पर, कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र में **14** शोध-विषयों पर, गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में **6** शोध-विषयों पर, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में **4** शोध-विषयों पर, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में **3** शोध-विषयों पर तथा जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू **1** में शोध-विषय पर शोध-कार्य हुआ है।

7.5 आधुनिककालीन संबंधी सामान्य, सैद्धांतिक एवं तुलनात्मक शोध-कार्य ः वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन -

विवेच्य विश्वविद्यालयों में आधुनिककालीन संबंधी सामान्य, सैद्धांतिक एवं तुलनात्मक शोध-कार्य के **89** शोध-ग्रंथ (सन् **1991** से **2010** तक) प्राप्त हुए हैं। इनका क्रमानुसार वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन इस प्रकार है-

1. शोधार्थी - कांता, कृष्ण

शोध-विषय - स्वतंत्र भारत के हिन्दी महाकाव्यों के संदर्भ में लोकायतन **(1950-1980)**

विश्वविद्यालय - जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

निर्देशक - गुप्ता, जनक

वर्ष - 1991

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **327** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में महाकाव्य का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में महाकाव्य की विकास-यात्रा का विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में लोकायतन के कथ्य तथा दर्शन का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में महाकाव्य के परिप्रेक्ष्य में लोकायतन का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में चिंतन की दृष्टि से लोकायतन का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों के सर्वथा प्रतिकूल है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा सरल तथा स्पष्ट है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क नहीं रही है। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी सामान्य हैं।

2. शोधार्थी - कौर, अमृतपाल

शोध-विषय - आधुनिक हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय और साम्प्रदायिक सद्भावना ः **1900** से आज तक

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - भावुक, कृष्ण

वर्ष - 1991

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **668** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में राष्ट्रीयता का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में धर्म, सम्प्रदाय और साम्प्रदायिक सद्भावना का स्वरूप तथा विविध आयाम प्रस्तुत किए गए हैं। तृतीय अध्याय में परम्परा, पृष्ठभूमि एवं परिवेश के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय एकता एवं सद्भावना का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में भरतेन्दुयुगीन काव्य के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय एकता और सांप्रदायिक सद्भावना को विश्लेषित किया गया है। पंचम अध्याय में द्विवेदीयुगीन काव्य के परिप्रेक्ष्य में सांप्रदायिक सद्भावना के विविध आयाम एवं रूपों का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में द्विवेदीयुगोत्तर एवं स्वतंत्रता पूर्व हिन्दी काव्य के संदर्भ में राष्ट्रीय एकता और सद्भावना का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर और समकालीन हिन्दी काव्य के संदर्भ में राष्ट्रीय एकता और सद्भावना का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची ठीक है तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। संदर्भ-सूची अध्याय के अंत में दी गई है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण का कार्य सामान्य स्तर का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

3. शोधार्थी - कौशल, मधु

शोध-विषय - समकालीन हिन्दी कविता का सौन्दर्यशास्त्रीय अध्ययन

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - राजपाल, हुकुमचन्द

वर्ष - **1991**

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **229** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित

की गई है। प्रथम अध्याय में साहित्य और समाज का सौन्दर्यशास्त्रीय अध्ययन किया गया है। द्वितीय अध्याय में सौन्दर्यबोध के संदर्भ में समकालीन कविता का विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में मुक्तिबोध के काव्य के परिप्रेक्ष्य में सौन्दर्य-बोध का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में धूमिल के काव्य के परिप्रेक्ष्य में सौन्दर्यबोध का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में सौन्दर्यबोध के संदर्भ में केदारनाथ के काव्य को विश्लेषित किया गया है। षष्ठ अध्याय में कुमार विकल के सौन्दर्यबोध की नई पृष्ठभूमि प्रस्तुत की गई है। सप्तम अध्याय में चन्द्रकांत देवताले के सौन्दर्यबोध की विचारधारा प्रकट की गई है। अंत में शोध-विषय का सार, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण सही हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। पृष्ठांकन की गणना विषयानुक्रमणिका से कर ली गई है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत उपलब्ध नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

4. **शोधार्थी -** गिल, प्रीति प्रसाद नी जयन्ता देवी

   शोध-विषय - नई कविता में व्यक्तिवादी चेतना

   विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

   निर्देशक - गुप्त, लालचंद 'मंगल'

   वर्ष - 1991

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **346** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में व्यक्तिवादी चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में नई कविता का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में प्रयोगवादी कविता के परिप्रेक्ष्य में व्यक्तिवादी चेतना का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में नई कविता के परिप्रेक्ष्य में व्यक्तिवादी चेतना का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में लम्बी कविताओं के परिप्रेक्ष्य में व्यक्तिवादी चेतना का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में नई कविता में प्रबंध काव्यों के

परिप्रेक्ष्य में व्यक्तिवादी चेतना का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में नई कविता में शिल्प-विधान के परिप्रेक्ष्य में व्यक्तिवादी चेतना का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत उपलब्ध नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। सहायक ग्रंथ-सूची पुस्तकानुक्रम में दी गई है। प्रबंध-टंकण ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

5. शोधार्थी - गौतम, सोहन लाल

शोध-विषय - आठवें दशक की प्रगतिशील कविता ः व्यंग्य के संदर्भ में

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - राय, लल्लन

वर्ष - 1991

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **235** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में व्यंग्य का सैद्धान्तिक विवचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में आठवें दशक की प्रगतिशील कविता के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक क्षेत्र में किए गए व्यंग्य का विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में राजनीतिक व्यंग्य का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में आर्थिक क्षेत्र में किए गए व्यंग्य का उल्लेख किया गया है। पंचम अध्याय में न्याय व प्रशासनिक क्षेत्र में किए गए व्यंग्य का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में किए गए व्यंग्य का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम व्यतिक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण में अध्यायों के समक्ष पृष्ठांकन

नहीं किया गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उत्तम है तथा जिल्दबंदी सामान्य है।

6. शोधार्थी - जोशी, शिव कुमार

शोध-विषय - पंजाब की साठोत्तरी हिन्दी कविता ः वर्तमान संदर्भ (1960 के बाद)

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - विमल, प्रभा

वर्ष - 1991

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध 7 अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल 314 पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर भारतीय परिस्थितियों का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में पंजाब की साठोत्तरी हिन्दी कविता के परिप्रेक्ष्य में समकालीनताबोध का विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में समकालीन वैचारिकता का विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में समसामयिक संदर्भों की अभिव्यक्ति की गई है। पंचम अध्याय में सांस्कृतिक राष्ट्रीय चेतना का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में महत्त्वपूर्ण कवियों का परिचय दिया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सजग नहीं रहा है। प्रबंध-टंकण अस्पष्ट है तथा जिल्दबंदी सामान्य है।

7. शोधार्थी - देवी, शीला

शोध-विषय - समकालीन प्रबंध काव्य ः परम्परा और आधुनिकता का द्वन्द्व

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - सहगल, मनमोहन

वर्ष - 1991

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **391** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में परम्परा और आधुनिकता का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में रामायण पर आधारित समकालीन प्रमुख प्रबंध काव्यों का विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में समकालीन सामान्य प्रबंध काव्यों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में महाभारत पर आधारित समकालीन प्रबंध काव्यों का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में शिव-कथा पर आधारित समकालीन प्रबंध काव्यों का उल्लेख किया गया है। षष्ठ अध्याय में पुराण पर आधारित समकालीन प्रबंध काव्यों का विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में इतिहास पर आधारित समकालीन प्रबंध काव्यों का विवेचन किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम शीर्षक के नीचे मध्य में दिए गए हैं। विषय सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सजग रही है। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

8. शोधार्थी - देशराज

शोध-विषय - आधुनिक हिन्दी कविता को पंजाब की देन

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - बेदी, गुरचरन सिंह

वर्ष - 1991

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **514** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में आधुनिक कविता का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में पंजाब की आधुनिक कविता का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में आधुनिक कविता का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में समकालीन संदर्भ में आधुनिक कविता का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में पंजाब की आधुनिक कविता की उपलब्धियों और सीमाओं का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ व्यतिक्रम में है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण में अध्यायों के समक्ष पृष्ठांकन नहीं किया गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा, विराम चिह्न तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध का टंकण कार्य सामान्य स्तर का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

9. शोधार्थी - राम, ऋषि

शोध-विषय - छायावादोत्तर मिथकाधारित हिन्दी प्रबंध काव्यों में युद्ध की समस्या

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - शर्मा, लक्ष्मीनारायण

वर्ष - 1991

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **555** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन गया है। द्वितीय अध्याय में मिथक का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में छायावादोत्तर मिथकाधारित हिन्दी प्रबंध काव्य एवं युद्ध की समस्या का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में छायावादोत्तर मिथकाधारित हिन्दी प्रबंध काव्य में युद्ध की समस्या का स्वरूप प्रकट किया गया है। पंचम अध्याय में छायावादोत्तर वैश्विक भारतीय परिवेश तथा हिन्दी प्रबंध काव्यों में

वर्णित युद्ध की समस्याओं का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है तथा शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सजग नहीं रहा है। प्रबंध-टंकण धूमिल-सा है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

10. शोधार्थी - रानी, अलका

शोध-विषय - मूल्य-सिद्धान्त और अनुप्रयोग (अज्ञेय द्वारा संपादित सप्तकों के विशेष संदर्भ में)

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - सूद, हरमोहन लाल

वर्ष - 1991

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **304** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में मूल्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी साहित्य और प्रयोगवाद का सामान्य परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में मूल्य के परिप्रेक्ष्य में तार सप्तक के कवियों और उनकी कविताओं का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में मूल्य के परिप्रेक्ष्य में दूसरे सप्तक के कवि और उनकी कविताओं का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में मूल्य के संदर्भ में तीसरे सप्तक के कवि और उनकी कविताओं का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में मूल्य के संदर्भ में चौथे सप्तक के कवि और उनकी कविताओं का अध्ययन किया गया है। सप्तक अध्याय में चारों सप्तकों में निहित मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पाद-

टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत अनुपस्थित हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा प्रभावशाली है। मात्रा व विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी सामान्य हैं।

11. शोधार्थी - विज, शोभना

शोध-विषय - नयी कविता के प्रमुख नाट्य काव्यों में आम आदमी की तलाश

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - शर्मा, ब्रजमोहन

वर्ष - 1991

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **236** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में आम आदमी का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में नयी कविता की मुल-संवेदना और आम आदमी को विश्लेषित किया गया है। तृतीय अध्याय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में रामायण पर आधारित नाट्य काव्यों में आम आदमी की तलाश का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में नये संदर्भ में महाभारत पर आधारित नाट्य काव्यों में आम आदमी की खोज की गई है। पंचम अध्याय में नये भावबोध की अभिव्यक्ति के परिप्रेक्ष्य में पौराणिक कथाओं पर आधारित नाट्य काव्यों में आम आदमी का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत उपलब्ध नहीं हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य अस्पष्ट तथा धूमिल-सा है। जिल्दबंदी सामान्य है।

12. शोधार्थी - शर्मा, सुभाष चन्द्र

शोध-विषय - भाई संतोख सिंह की भक्ति भावना 'गु प्रताप सूरज' और 'गु नानक प्रकाश' के संदर्भ में

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - गोयल, जय भगवान

वर्ष - 1991

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **317** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में भाई संतोख सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में भक्ति परम्परा और सिख गु ओं की भक्ति भावना का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में भक्ति का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में भाई संतोख सिंह की भक्ति भावना का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में भाई संतोख सिंह के भक्ति उपकरणों का उल्लेख किया गया है। षष्ठ अध्याय में भाई संतोख सिंह की भक्ति के परिप्रेक्ष्य में समन्वय भावना का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। पृष्ठांकन की गणना विषयानुक्रमणिका से कर ली गई है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक है।

13. शोधार्थी - कुमार, शुभदर्शन

शोध-विषय - हिन्दी अकविता में संवेदना और शिल्प

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - राजपाल, हुकुमचन्द

वर्ष - 1992

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **289** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संवेदना का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में शिल्प का सैद्धांतिक अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में अकविता का सामान्य परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में श्री कांत वर्मा के संदर्भ में कल्पना से विद्रोह की यात्रा का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में जगदीश चतुर्वेदी का अकविता के प्रवर्तक के तौर पर विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में आंतरिक उफान के प्रयोगधर्मी के परिप्रेक्ष्य में सौमित्र मोहन का विवेचन किया गया है। सप्तम अध्याय में सामाजिक यथार्थ की समझ कवि के रूप में राजकमल चौधरी का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में कुमार विकल की सैद्धांतिक आग्रहों से मुक्त कवि के रूप में चर्चा की गई है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल नहीं है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य अस्पष्ट है तथा जिल्दबंदी सामान्य है।

14. शोधार्थी - कुमारी, अंजना

शोध-विषय - संस्कृत काव्यशास्त्र का शैलीवैज्ञानिक प्रतिमान ः सिद्धान्त और विश्लेषण

(मुक्तिबोध की लम्बी कविताओं के संदर्भ में)

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - पाण्डेय, शशिभूषण 'शीतांशु'

वर्ष - 1992

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **9** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **566** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित

की गई है। प्रथम अध्याय में संस्कृत काव्यशास्त्र का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में शैलीविज्ञान का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में संस्कृत काव्यशास्त्र और पश्चिमी शैलीविज्ञान के अन्तर और अन्तस्संबंध का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में संस्कृत काव्यशास्त्र के शैलीविज्ञान प्रतिमानों का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में अन्यथाकरण प्रतिमान के आधार पर मुक्तिबोध कृत 'चांद का मुंह टेढ़ा है' कविता का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में अन्यथाकरण प्रतिमान के आधार पर मुक्तिबोध कृत 'अंधेरे में' कविता का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में 'ओ काव्यात्मन् फार्णधर' कविता का विवेचन किया गया है। अष्टम अध्याय में 'डूबता चांद कब डूबेगा' कविता का उल्लेख किया गया है। नवम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण का कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

15. शोधार्थी - प्रतिमा

शोध-विषय - नरेन्द्र शर्मा और नरेश मेहता के प्रबंध काव्य के कथा-स्रोतों का तुलनात्मक आधार तथा समकालीन प्रासंगिकता

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - शर्मा, सन्तोष कुमारी

वर्ष - 1992

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **4** खंडों के अंतर्गत **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **433** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **3** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में तुलना के

निकष के संदर्भ में प्रतिपाद्य संरचना, समकालीनता और समकालीन प्रासंगिकता का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में नरेन्द्र शर्मा और नरेश मेहता के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय खंड में 4 अध्याय हैं। चतुर्थ अध्याय में नरेन्द्र शर्मा के प्रबंध काव्यों की वैचारिक बीजभूमि का उल्लेख किया गया है। पंचम अध्याय में नरेश मेहता के प्रबंध काव्यों की वैचारिक बीजभूमि का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में कथास्रोतों के आधार पर नरेन्द्र शर्मा और नरेश मेहता के काव्यों की तुलना की गई है तथा साथ ही उनकी समकालीन प्रासंगिकता की चर्चा गई है। सप्तम अध्याय में समकालीनता के आधार पर इनके काव्यों की तुलना की गई है। तृतीय खंड में अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। चतुर्थ खंड में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध का टंकण साधारण स्तर का है तथा जिल्दबंदी सामान्य है।

16. शोधार्थी - सिंह, परमजीत

शोध-विषय - साठोत्तर हिन्दी कविता में सांस्कृतिक चेतना

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - भूषण, भारत

वर्ष - 1992

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध 6 अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल 361 पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में साठोत्तरी हिन्दी कविता का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में सांस्कृतिक चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में साठोत्तर हिन्दी कविता के परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक चेतना के नैतिक, धार्मिक और दार्शनिक आयाम का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में साठोत्तर हिन्दी कविता के परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक चेतना के सामाजिक आयाम का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में साठोत्तर हिन्दी कविता के परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक चेतना के राजनीतिक आयाम का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में

शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा व विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उत्तम है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

17. शोधार्थी - अग्रवाल, अंजलि

शोध-विषय - आधुनिक कृष्ण काव्य में नारी

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - गुलाटी, मदन

वर्ष - 1993

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **297** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में चरित्र संबंधी अवधारणा का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में कृष्ण काव्य परम्परा का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में आधुनिककालीन कृष्ण काव्य का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में आधुनिक कृष्ण काव्य के परिप्रेक्ष्य में माता के चरित्र का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में पत्नी के चरित्र का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में प्रेयसी के चरित्र का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक व उपशीर्षक दिए गए हैं। उपसंहार में शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध-टंकण ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

18. शोधार्थी - कुमार, राकेश

शोध-विषय - मानवीय मूल्य ः सिद्धान्त और अनुप्रयोग

(रामधारी सिंह दिनकर के 'कु क्षेत्र', 'रश्मिरथी' और 'उर्वशी' के संदर्भ में)

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - सूद, हरमोहन लाल

वर्ष - 1993

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **373** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हिन्दी साहित्येतिहास और दिनकर के युग का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में दिनकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में मानव-मूल्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में जैविक मूल्यों के संदर्भ में दिनकर के प्रबंध काव्यों का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में दिनकर के प्रबंध काव्यों के परिप्रेक्ष्य में पराजैविक मूल्यों का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची ठीक है तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा संयत है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

19. शोधार्थी - कुमार, हरिन्द्र

शोध-विषय - मैथिलीशरण गुप्त एवं रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना का तुलनात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - गुप्त, चमन लाल

वर्ष - 1993

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **265** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में राष्ट्रीय चेतना एवं तुलनात्मकता के सैद्धान्तिक विवेचन के साथ, गुप्त एवं दिनकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में गुप्त एवं दिनकर के काव्य के परिप्रेक्ष्य में राजनीतिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में सांस्कृतिक चेतना का तुलनात्मक विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में आर्थिक चेतना का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

20. शोधार्थी - पंत, कुल राजीव

शोध-विषय - साठोत्तरी कविता में व्यंग्य

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - राकेशी, अनिल

वर्ष - 1993

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **266** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में व्यंग्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में साठोत्तरी कविता के परिप्रेक्ष्य में राजनीति, प्रशासन और न्याय व्यवस्था संबंधी किए गए व्यंग्यों का

विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में अर्थतंत्र संबंधी व्यंग्यों का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में सामाजिक-सांस्कृतिक व्यंग्यों का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम शीर्षक के नीचे निश्चितक्रम में हैं। शोधार्थी का नाम यथानियम है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण सही हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक दिए गए हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उच्च स्तर का है तथा जिल्दबंदी ठीक है।

21. शोधार्थी - बैच, दविन्द्र कुमार

शोध-विषय - सुमित्रानंदन पंत तथा भाई वीर सिंह का कवि के रूप में तुलनात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - बेदी, हरमहेन्द्र सिंह

वर्ष - 1993

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **545** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में सुमित्रानंदन पंत तथा भाई वीर सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में विवेच्य कवियों की प्रकृति संबंधी काव्य की विषय-वस्तु का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में इनके प्रकृति-काव्य की प्रमुख मान्यताओं का तुलनात्मक विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में इनके सौन्दर्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में इनकी भाषा और शिल्प का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची सही है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत उपलब्ध नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क नहीं रहा है। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

22. शोधार्थी - रघुनाथ

शोध-विषय - नवगीत ः कथ्य वैविध्य और शैल्पिक संरचना

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - प्रकाश, जय

वर्ष - 1993

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **2** खंडों के अंतर्गत **13** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **668** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **3** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में नवगीत की यात्राक्रम का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में नवगीत का एक नवोदित विधा के रूप में अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में नवगीतात्मक ग्रंथ एवं नवगीत रचनाकारों का परिचय दिया गया है। द्वितीय खंड में **10** अध्याय हैं। चतुर्थ अध्याय में नवगीत के कथा-वैविध्य का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में नवगीत के परिप्रेक्ष्य में आधुनिकताबोध की चर्चा की गई है। षष्ठ अध्याय में नवगीत के संदर्भ में महानगरीय भावबोध का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में नवगीत के परिप्रेक्ष्य में ग्राम्य-परिवेश का चित्रण किया गया है। अष्टम अध्याय में भौगोलिक एवं आंचलिक प्रभाव का अंकन किया गया है। नवम अध्याय में लोकतत्त्व, जातीय, संस्कृति, आस्था एवं विश्वास से जुड़े रचना-क्रम की चर्चा की गई है। दशम अध्याय में नवगीत के परिप्रेक्ष्य में प्रणय एवं सौन्दर्य की उन्मुक्त अभिव्यक्ति का अध्ययन किया गया है। एकादश अध्याय में नवगीत के परिप्रेक्ष्य में प्रकृति के स्वरूप की चर्चा की गई है। द्वादश अध्याय में नवगीत के परिप्रेक्ष्य में शैल्पिक संरचना का विवेचन किया गया है। त्रयोदशी अध्याय में शोध-विषय का सार दिया गया है। अंत में पत्र तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां न के बराबर हैं। प्रबंध-टंकण सामान्य है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

23. शोधार्थी - सिंह, बलदेव

शोध-विषय - हिन्दी के छायावादी कवियों के काव्यादर्श

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - मेहता, रामनाथ

वर्ष - 1993

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **346** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में कवि एवं कवि निर्मित काव्यादर्शों का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में संस्कृत एवं हिन्दी के काव्यादर्शों का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में हिन्दी के छायावादी युगीन आलोचकों और कवियों का परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में छायावादी कवियों के काव्य-स्वरूप विषयक आदर्शों का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में छायावादी कवियों के काव्य-तत्त्व विषयक आदर्शों का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में काव्य-शिल्प विषयक आदर्शों का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में छायावादी कवियों द्वारा स्थापित नवीन आदर्शों का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। अध्यायीकरण में अध्यायों के समक्ष पृष्ठांकन नहीं किया गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का

निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा प्रभावशाली है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

24. शोधार्थी - कौर, कंवलजीत

शोध-विषय - जयशंकर प्रसाद और भाई वीर सिंह के काव्य में प्रकृति-चित्रण का तुलनात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - नरेश

वर्ष - 1994

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **257** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में जयशंकर प्रसाद और भाई वीर सिंह के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं तद्युगीन परिवेश का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी और पंजाबी कविता के परिप्रेक्ष्य में प्रकृति-चित्रण की परम्परा का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में जयशंकर प्रसाद और भाई वीर सिंह के जीवन-दर्शन को विश्लेषित किया गया है। चतुर्थ अध्याय में जयशंकर प्रसाद और भाई वीर सिंह के काव्य के परिप्रेक्ष्य में प्रकृति-चित्रण का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में जयशंकर प्रसाद और भाई वीर सिंह के काव्य-कौशल का तुलनात्मक विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में जयशंकर प्रसाद और भाई वीर सिंह के प्रकृति-काव्य का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क नहीं रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

25. शोधार्थी - नागपाल, सरिता

शोध-विषय - तार सप्तक के कवि ः परिप्रेक्ष्य एवं प्रयोग

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - सिंहल, बैजनाथ

वर्ष - 1994

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **304** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में छायावादोत्तर कालीन परिस्थितियां एवं उनके प्रभावों का अध्ययन किया गया है। द्वितीय अध्याय में प्रयोगवाद का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में तार सप्तक के कवियों के वक्तव्य-विश्लेषण का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में तार सप्तक के कवियों का भावबोधगत विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में मनोवैज्ञानिकता के परिप्रेक्ष्य में तार सप्तक के कवियों का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में तार सप्तक के कवियों द्वारा किए गए भाषा और शिल्प संबंधी प्रयोगों का विवेचन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम व्यतिक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत उपलब्ध नहीं हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

26. शोधार्थी - बाला, नीलम

शोध-विषय - कविता का संकेत संरचनात्मक प्रतिमान और विश्लेषण

(निराला कृत गीतिका की चयनित गीतियों के संदर्भ में)

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - पांडेय, शशिभूषण 'शीतांशु'

वर्ष - 1994

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **16** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **705** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संकेत-विज्ञान और संरचनावाद का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में संकेत और संरचना के स्वरूप का विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में कविता में विश्लेषण के विभिन्न संकेत-संरचनात्मक प्रतिमानों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में विश्लेष्य के संदर्भ में गृहणीय संकेत-संरचनात्मक अग्र प्रस्तुति प्रतिमानों का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में 'वर दे वीणा वादिनी वर दे' का गृहीत प्रतिमानों के आधार पर विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में 'भारती जय, विजय करे' का गृहीत प्रतिमानों के आधार पर अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में 'तपा जब यौवन का दिनकर' का गृहीत प्रतिमानों के आधार पर उल्लेख किया गया है। अष्टम अध्याय में 'कौन तुम शुभ्र किरण वसना'का गृहीत प्रतिमानों के आधार पर अध्ययन किया गया है। नवम अध्याय में 'सखी रीडाल' का गृहीत प्रतिमानों के आधार पर उल्लेख किया गया है। दशम अध्याय में 'नयनों के डोरे लाल गुलाल भरे' का गृहीत प्रतिमानों के आधार पर विवेचन किया गया है। एकादश अध्याय में 'स्पर्श से लाज लगी' का गृहीत प्रतिमानों के आधार पर विश्लेषण किया गया है। द्वादश अध्याय में 'प्यार करती हूं अलि' का गृहीत प्रतिमानों के आधार पर अध्ययन किया गया है। त्रयोदशी अध्याय में 'सरि धीरे बह री' का गृहीत प्रतिमानों के आधार पर वर्णन किया गया है। चतुर्दश अध्याय में 'सकल गुणों की खान-प्राण तुम' का गृहीत प्रतिमानों के आधार पर विवेचन किया गया है। पंचदश अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय तथा उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। षोडश अध्याय में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी सामान्य हैं।

27. शोधार्थी - भण्डारी, रीमा

शोध-विषय - प्रसाद और निराला के काव्य में प्रयुक्त व्यामोरी शब्द-प्रयोग ः सार्थकता और साभिप्रायता

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - पांडेय, शशिभूषण 'शीतांशु'

वर्ष - 1994

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध दो भागों के अंतर्गत **36** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **675** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम भाग में **16** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में शब्द-प्रयोग और व्यामोरी शब्द-प्रयोग का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में मन के प्रयोग के परिप्रेक्ष्य में प्रसाद के काव्य में प्रयुक्त व्यामोरी शब्दों का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में हृदय के प्रयोग के परिप्रेक्ष्य में प्रसाद के काव्य में प्रयुक्त व्यामोरी शब्दों का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में आंख के प्रयोग के परिप्रेक्ष्य में प्रसाद के काव्य में प्रयुक्त व्यामोरी शब्दों का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में जल के प्रयोग के परिप्रेक्ष्य में प्रसाद के काव्य में प्रयुक्त व्यामोरी शब्दों का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में विश्व के प्रयोग के परिप्रेक्ष्य में प्रसाद के काव्य में प्रयुक्त व्यामोरी शब्दों का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में रूप के प्रयोग के परिप्रेक्ष्य में प्रसाद के काव्य में प्रयुक्त व्यामोरी शब्दों का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में सुंदर, नवम अध्याय में प्रेम, दशम अध्याय में आनन्द, एकादश अध्याय में मधु, द्वादश अध्याय में मधुर, त्रयोदशी अध्याय में लहर, चतुर्दश अध्याय में चन्द्र, पंचदश अध्याय में कुसुम और षोडश अध्याय में जीवन के प्रयोग के परिप्रेक्ष्य में प्रसाद के काव्य में प्रयुक्त व्यामोरी शब्दों का विवेचन किया गया है। द्वितीय भाग में **20** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में नव के प्रयोग के परिप्रेक्ष्य में निराला के काव्य में प्रयुक्त व्यामोरी शब्दों का अध्ययन किया गया है। द्वितीय अध्याय में प्रिय, तृतीय अध्याय में मन, चतुर्थ अध्याय में डर, पंचम अध्याय में हृदय, षष्ठ अध्याय में प्राण, सप्तम अध्याय में नयन, अष्टम अध्याय में आंख, नवम अध्याय में जग, दशम अध्याय में विश्व, एकादश अध्याय में ज्योति, द्वादश अध्याय में घन, त्रयोदशी अध्याय में जल, चतुर्दश अध्याय में रूप, पंचदश अध्याय में कवि, षोडश अध्याय में कली, सप्तदश अध्याय में किरण, अष्टादश अध्याय में पथ और

नवदश अध्याय में कर के प्रयोग के परिप्रेक्ष्य में निराला के काव्य में प्रयुक्त व्यामोरी शब्दों का विवेचन किया गया है। द्विदश अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची लम्बी है तथा अध्यायीकरण विस्तृत है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण उच्च कोटि का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

28. शोधार्थी - शर्मा, दौलत राम

शोध-विषय - साठोत्तरी हिन्दी कविता में भाषा-प्रयोग

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - कपूर, नवरत्न

वर्ष - 1994

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **9** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **280** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में साठोत्तरी हिन्दी कविता का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में कविता के परिप्रेक्ष्य में भाषा-प्रयोग की चर्चा की गई है। तृतीय अध्याय में सपाटबयानी का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में सर्वभौमिक शब्दों के प्रयोग का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में सहज-बिम्बों के प्रयोग का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में प्रतीकों के अभिनव प्रयोग का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में लम्बी कविताओं के परिप्रेक्ष्य में भाषा-प्रयोग का विश्लेषण किया गया है। अष्टम अध्याय में भाषा के विशिष्ट प्रयोग की चर्चा की गई है। नवम अध्याय में साठोत्तरी हिन्दी कविता में भाषा-प्रयोग की उपलब्धियों और संभावनाओं का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत अनुपस्थित हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा व विराम-चिह्नों की अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क नहीं रहा है। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी उत्तम कोटि के हैं।

29. शोधार्थी - इरशाद, मोहमद

शोध-विषय - समकालीन हिन्दी कविता में समय और समाज

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - सहगल, सत्यपाल

वर्ष - 1995

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **10** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **321** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में साहित्य, समय और समाज का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में समय और समाज का विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में समकालीन कविता और राजनीति की चर्चा की गई है। पंचम अध्याय में समकालीन कविता के सामाजिक-सांस्कृतिक भूगोल का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में समकालीन कविता के परिप्रेक्ष्य में प्रकृति का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में समकालीन कविता के संदर्भ में उत्पीड़न और संघर्ष का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में समकालीन कविता के संदर्भ में स्त्री, प्रेम और दाम्पत्य का उल्लेख किया गया है। नवम अध्याय में समकालीन कविता के संदर्भ में दैनिक जीवन और अनुभव की चर्चा की गई है। दशम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

30. शोधार्थी - नखरेटा, अनंत राम

शोध-विषय - नौवें दशक की हिन्दी कविता ः कथ्य एवं शिल्प

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - कुमार, कृष्ण

वर्ष - 1995

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **431** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में कथ्य एवं शिल्प का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में पूर्ववर्ती परिप्रेक्ष्य में नौवें दशक की हिन्दी कविता का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में सामाजिक-आर्थिक संदर्भ में नौवें दशक की हिन्दी कविता का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में नौवें दशक की हिन्दी कविता का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में शिल्प की दृष्टि से नौवें दशक की हिन्दी कविता का मूल्यांकन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अनुच्छेदों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। संदर्भ-सूची पुस्तकानुक्रम में है। प्रबंध की भाषा स्पष्ट, शैली प्रवाहपूर्ण है। अशुद्धियां अल्प हैं एवं टंकण अच्छा है। जिल्दबंदी सशक्त है।

31. शोधार्थी - मल्होत्रा, अंजु

शोध-विषय - आधुनिक हिन्दी तथा पंजाबी कविता में पृथक्करण के विविध रूप ः एक तुलनात्मक अध्ययन
(1960 से 1985 तक)

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - नरेश

वर्ष - 1995

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **520** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में पृथक्करण तथा धर्म का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में व्यक्ति तथा हिन्दी-पंजाबी कविता का विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में पृथक्करण के संदर्भ में आधुनिकता की चर्चा की गई है। चतुर्थ अध्याय में पृथक्करण के परिप्रेक्ष्य में नीति का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में सांस्कृतिक विरासत का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में उत्पादन क्षेत्र का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

32. शोधार्थी - शर्मा, सीमा

शोध-विषय - साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र ः सिद्धान्त और साभिप्राय विश्लेषण
(मुक्तिबोध की चयनित स्वैरकल्पनात्मक कविताओं के संदर्भ में)

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - पांडेय, शशिभूषण 'शीतांशु'

वर्ष - 1995

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **10** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **621** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में साहित्य और सौन्दर्यशास्त्र का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में साहित्य के विभिन्न आलोचनात्मक अभिगमों का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में 'ब्रह्मराक्षस' के संदर्भ में साहित्य के सौन्दर्यशास्त्र का साभिप्राय विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में 'दिमागी गुहांकार' का औरांग-उटांग के संदर्भ में साहित्य के सौन्दर्यशास्त्र का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में 'ओकाव्यात्मन फार्णधर' के संदर्भ में साहित्य के सौन्दर्य शास्त्र का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में 'चकमक की चिनगारियां', सप्तम अध्याय में 'अन्तःकरण का आयतन', अष्टम अध्याय में 'प्रबंध उत्तरा' और नवम अध्याय में 'संदर्भण' के संदर्भ में साहित्य के सौन्दर्यशास्त्र का विवेचन किया गया है। दशम अध्याय में मुक्तिबोध की सौन्दर्य शास्त्रीय मान्यताओं का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी उचित क्रम में हैं। विषय-सूची सही है। अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा-शैली स्पष्ट है। मात्रात्मक अशुद्धियां कम हैं। टंकण धूमिल एवं जिल्दबंदी मजबूत है।

33. शोधार्थी - ठाकुर, मंजु

शोध-विषय - युग-बोध के संदर्भ में 'राम-चन्द्रिका', 'साकेत', 'राम की शक्ति पूजा' और 'सशंय की एक रात' का तुलनात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - भारद्वाज, मैथिलीप्रसाद

वर्ष - 1996

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **4** खंडों के अंतर्गत **10** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **299** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **3** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में युग-बोध का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में रामवृत की परम्परा का प्राचीन, उत्तरमध्यकाल तथा आधुनिकता के संदर्भ में अध्ययन किया गया है। द्वितीय खंड में **6** अध्याय हैं। चतुर्थ अध्याय में 'तुलसीदास' की रामकथा को विश्लेषित किया गया है। पंचम अध्याय में 'केशव' की रामकथा का उल्लेख किया गया है। षष्ठ अध्याय में 'मैथिलीशरण गुप्त' की रामकथा का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में 'सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला' की रामकथा का उल्लेख किया गया है। अष्टम अध्याय में 'नरेश मेहता' की रामकथा की चर्चा की गई है। नवम अध्याय में रामकाव्य के संदर्भ में कवियों की मौलिकता व प्रासंगिकता का विवेचन किया गया है। तृतीय खंड में दशम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। चतुर्थ खंड में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। विषय-सूची में पृष्ठ संख्या का विवरण नहीं दिया गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

34. शोधार्थी - रानी, रेखा

शोध-विषय - साहित्यिक सौन्दर्यबोधशास्त्रीय अध्ययन ः सिद्धान्त एवं प्रयोग

(छायावादी काव्य के विशेष संदर्भ में)

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - शर्मा, नीलम

वर्ष - 1996

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **395** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में सौन्दर्यशास्त्र का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में काव्य के सौन्दर्यबोधशास्त्र का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में छायावादी काव्य का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में छायावादी काव्य के परिप्रेक्ष्य में भाषा का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में छायावादी काव्य के परिप्रेक्ष्य में विविध ललित कलाओं के अन्तःसंबंधों का विवेचन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। प्रबंध लेखन में त्रुटियां है। हाशिए का समुचित ध्यान नहीं रखा गया है। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। भाषागत व वर्तनी संबंधी अशुद्धियां हैं। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी सामान्य हैं।

35. शोधार्थी - शर्मा, सुनील

शोध-विषय - बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' और रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना ः तुलनात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - रैणा, कृष्णा

वर्ष - 1996

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **391** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में राष्ट्रीय चेतना और हिन्दी काव्य का अध्ययन किया गया है। द्वितीय अध्याय में नवीन और दिनकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में विवेच्य कवियों के काव्य के परिप्रेक्ष्य में राजनीतिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन किया गया

है। चतुर्थ अध्याय में सांस्कृतिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में सामाजिक तथा आर्थिक चेतना का तुलनात्मक विवेचन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेत उपलब्ध नहीं हैं। प्रबंध की भाषा संयत तथा स्पष्ट है। वर्तनी तथा मात्रा संबंधी अशुद्धियां कम हैं। परिशिष्ट में आकारादि नियम का पालन नहीं किया गया है। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी सामान्य हैं।

36. शोधार्थी - वर्मा, राधा

शोध-विषय - व्यक्तिनामपरक साठोत्तरी हिन्दी कविता ः कथ्य एवं शिल्प

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - कुमार, कृष्ण

वर्ष - 1997

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **4** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **325** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में कथ्य एवं शिल्प का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में व्यक्तिनामपरक प्रारंभिक हिन्दी कविता का विश्लेषण किया गया है। तृतीय अध्याय में आधुनिक हिन्दी कविता के परिप्रेक्ष्य में व्यक्तिनामपरक कविताओं की सार्थक शुरूआत का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में व्यक्तिनामपरक साठोत्तरी हिन्दी कविताओं का विवेचन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा पृष्ठांकन ठीक हैं। अध्याय व्यवस्थित है। पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेतों का उल्लेख नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सुगम है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सजग रहा है। टंकण-कार्य उत्तम तथा सुपाठ्य है, जिल्दबंदी अच्छी है।

37. शोधार्थी - शर्मा, निशा

शोध-विषय - साठोत्तरी हिन्दी काव्य में पौराणिक पुनराख्यान

(बोध और व्यंजना के निकष पर)

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - वर्मा, सत्यवीर सिंह

वर्ष - 1997

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **3** खंडों के अंतर्गत **15** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **336** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **3** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में साठोत्तरी हिन्दी काव्य का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में पौराणिक पुनराख्यान का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में बोध और व्यंजना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय खंड में **6** अध्याय हैं। चतुर्थ अध्याय में साठोत्तरी पौराणिक पुनराख्यानमूलक हिन्दी कविता के परिप्रेक्ष्य में वैयक्तिकबोध का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में सामाजिक चेतना, षष्ठ अध्याय में राजनीतिक बोध, सप्तम अध्याय में सांस्कृतिक बोध, अष्टम अध्याय में साहित्यिक बोध और नवम अध्याय में आधुनिकता बोध के परिप्रेक्ष्य में साठोत्तरी पौराणिक पुनराख्यानमूलक हिन्दी कविता का विवेचन किया गया है। तृतीय खंड में **6** अध्याय हैं। दशम अध्याय में भाषिक-भंगिमा, एकादश अध्याय में अलंकरण-विधान, द्वादश अध्याय में बिम्ब-विधान, त्रयोदशी अध्याय में प्रतीक-योजना और चतुर्दश अध्याय में छन्दबंध और शैली-सौन्दर्य के परिप्रेक्ष्य में साठोत्तरी पौराणिक पुनराख्यानमूलक हिन्दी कविता का विश्लेषण किया गया है। पंचदश अध्याय में भारतीयता बोध की कविता के साथ, शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची तथा पृष्ठांकन सही हैं। पाद-टिप्पणियां तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहपूर्ण है। अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध का टंकण कार्य उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

38. शोधार्थी - सरस्वती

शोध-विषय - सप्तक-काव्य में युगबोध

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - वेदालंकार, विजय कुमार

वर्ष - 1997

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **204** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में युगबोध, प्रयोग और नई कविता का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में सप्तक-काव्य के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक युगबोध का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में सांस्कृति युगबोध का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में राजनीतिक युगबोध का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में आर्थिक युगबोध का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर शोध-नियमों का समुचित पालन नहीं हुआ है। विषय-सूची सुस्पष्ट है। अध्यायीकरण तथा पृष्ठांकन सही हैं। पाद-टिप्पणियों में भी यदा-कदा शोध-नियमों की अवहेलना हो गई है। शोध-संकेत नहीं मिलते। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों का परिहार किया गया हैं। प्रबंध का टंकण सुन्दर तथा सुपाठ्य है, जिल्दबंदी अच्छी है।

39. शोधार्थी - सविता

शोध-विषय - आधुनिक हिन्दी कविता के प्रमुख वाद

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - कुमार, कृष्ण

वर्ष - 1997

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **408** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में आधुनिक हिन्दी कविता का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में आधुनिक हिन्दी कविता के विकास में विभिन्न वादों की भूमिकाओं का विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में छायावादोत्तर हिन्दी कविता के विभिन्न वादों का विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में प्रगतिवादोत्तर हिन्दी कविता के विभिन्न वादों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में आधुनिक हिन्दी कविता के प्रमुख वादों का मूल्यांकन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम यथा स्थान हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा अच्छी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी उच्च कोटि के हैं।

40. शोधार्थी - कुमारी, सुरीना

शोध-विषय - धर्मवीर भारती और श्री नरेश मेहता के काव्यगत बिम्ब-विधान और प्रतीक-योजना की तुलना

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - शर्मा, लक्ष्मीनारायण

वर्ष - 1998

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **9** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **306** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में बिम्ब-विधान और प्रतीक-योजना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में धर्मवीर भारती के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में नरेश मेहता के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में

धर्मवीर भारती के काव्यगत बिम्ब-विधान का स्वरूप प्रकट किया गया है। पंचम अध्याय में मेहता के काव्यगत बिम्ब-विधानों के स्वरूप का उल्लेख किया गया है। षष्ठ अध्याय में भारती और मेहता के बिम्ब-विधानों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में भारती के काव्यगत प्रतीक-योजना के स्वरूप का उल्लेख किया गया है। अष्टम अध्याय में मेहता के काव्यगत प्रतीक-योजना के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। नवम अध्याय में भारती और मेहता की प्रतीक-योजना का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

41. शोधार्थी - रमण, तुलसी

शोध-विषय - समकालीन हिन्दी कविता में समाजबोध के आयाम

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - अवस्थी, ओम्

वर्ष - 1998

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **163** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में कविता और समाज-बोध का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी कविता के परिप्रेक्ष्य में समाजबोध की परम्परा का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में समकालीन कविता का परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में राजनीतिक एवं सामाजिक-आर्थिक आयामों का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में मनुष्य और परिवार का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में संस्कृति एवं कलाबोध का विश्लेषण किया गया है। अंत

में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत उपलब्ध नहीं हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

42. शोधार्थी - राणा, आशा

शोध-विषय - छायावादोत्तर हिन्दी कविता में छायावादी चेतना का स्वर

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - शर्मा, लक्ष्मीनारायण

वर्ष - 1998

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **10** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **461** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में छायावादी काव्य का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में छायावादोत्तर हिन्दी कविता में छायावादी चेतना के आधार सूत्रों का विश्लेषण किया गया है। तृतीय अध्याय में छायावादोत्तर काल के विशिष्ट छायावादी कवियों और उनकी रचनाओं का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में छायावादोत्तर हिन्दी कविता का छायावादी विकासक्रम निर्धारित किया गया है। पंचम अध्याय में व्यक्तिपरक काव्यधारा के परिप्रेक्ष्य में छायावादी चेतना के स्वर का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में राष्ट्रीय काव्यधारा के परिप्रेक्ष्य में छायावादी चेतना के स्वरों का विवेचन किया गया है। सप्तम अध्याय में छायावादी चेतना के स्वर के परिप्रेक्ष्य में प्रगतिवादी काव्यधारा का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में छायावादी चेतना के स्वर के परिप्रेक्ष्य में प्रयोगवादी काव्यधारा का अध्ययन किया गया है। नवम अध्याय में छायावादी चेतना के स्वर के परिप्रेक्ष्य में नई कविता और परवर्ती कविता का अध्ययन किया गया है। दशम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सामान्य है।

43. शोधार्थी - शर्मा, हरिराम

शोध-विषय - नयी कविता के कवियों का काव्य-दर्शन

(अज्ञेय, भारती, सक्सेना एवं सहाय के संदर्भ में)

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - मेहता, रामनाथ

वर्ष - 1998

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध 7 अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **385** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में कवि एवं उनके काव्य-दर्शनों का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में नयी कविता के अध्ययन के साथ, उसके समीक्षक कवियों का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में नयी कविता के कवियों के काव्य-दर्शन का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में कवियों के काव्य-उद्देश्यों का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में काव्य-तत्त्वों का उल्लेख किया गया है। षष्ठ अध्याय में शिल्प का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में नवीन काव्य-दर्शनों का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक बारीक अक्षरों में है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहपूर्ण है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

44. शोधार्थी - गोयल, शमा

शोध-विषय - छायावादी काव्य में संगीत-तत्त्व

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - सिंह, सेवा

वर्ष - 1999

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **356** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में साहित्य और संगीत का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में छायावाद व गीतितत्त्व का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय मे संगीत के उद्गम का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में छायावाद काव्य के परिप्रेक्ष्य में संगीत-तत्त्वों का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में राग-तल-बद्ध स्वरलिपियों का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-नियमों के अनुरूप है। विषय-सूची व्यवस्थित है। पृष्ठांकन ठीक है। पाद-टिप्पणियां शोध-प्रविधि के अनुरूप हैं। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा, विराम चिह्न व वर्तनी संबंधी अशुद्धियां रह गई हैं। प्रबंध-टंकण ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

45. शोधार्थी - बाला, सुमन

शोध-विषय - सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और बावा बलवंत के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - बेदी, हरमहेन्द्र सिंह

वर्ष - 1999

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **722** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और बावा बलवंत के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में विवेच्य कवियों के युग एवं उसके प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। तृतीय अध्याय में विवेच्य कवियों के काव्य का दार्शनिक तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में विवेच्य कवियों के काव्य का साहित्यिक मूल्यांकन किया गया है। पंचम अध्याय में विवेच्य कवियों की भारतीय काव्य को देन का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। संदर्भ -सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा संयत, शैली प्रवाहपूर्ण है। मात्रात्मक त्रुटियां व वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी उच्च कोटि के हैं।

46. शोधार्थी - रंजना

शोध-विषय - महर्षि दयानंद के चिंतन के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी की राष्ट्रीय कविता का अध्ययन (नवजागरण काल)

विश्वविद्यालय- महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - मिश्र, नरेश

वर्ष - 1999

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **11** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **352** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नवजागरण काल का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में नवजागरण कालीन हिन्दी राष्ट्रीय कविता का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में दयानंद

के राष्ट्र संबंधी प्रमुख विचारों का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में नवजागरण कालीन हिन्दी राष्ट्रीय कविता के परिप्रेक्ष्य में देश-प्रेम का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में भारतीयता, षष्ठ अध्याय में स्वभाषा संबंधी विचार, सप्तम अध्याय में समाजोद्धार तथा अष्टम अध्याय में धर्म एवं संस्कृति का विश्लेषण किया गया है। नवम अध्याय में नवजागरण कालीन हिन्दी कविता के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा संबंधी विचारों का उल्लेख किया गया है। दशम अध्याय में व्यक्तित्व विकास का अध्ययन किया गया है। एकादश अध्याय में भाषायी स्वरूप का विवेचन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुख शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची तथा पृष्ठांकन व्यवस्थित हैं। अध्यायीकरण तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत उपलब्ध नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रात्मक त्रुटियां तथा वर्तनी के प्रयोग की अशुद्धियों कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

47. शोधार्थी - शर्मा, ब्रह्मदत्त

शोध-विषय - प्रगतिशील कविता में प्रकृति

(विशेष संदर्भ- नार्गाजुन, त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल)

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - राय, लल्लन

वर्ष - 1999

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **444** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में प्रकृति का ऐतिहासिक सर्वेक्षण किया गया है। द्वितीय अध्याय में प्रकृति का ग्रामीण किसानी रूप प्रकट किया गया है। तृतीय अध्याय में ऋतु का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में प्राकृतिक चित्रण के परिप्रेक्ष्य में दिन और रात का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में प्रर्वतीय प्रकृति-चित्रण का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में मेघ,

सागर, सरिता एवं अन्य प्रकृति रूपों का चित्रण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

48. शोधार्थी - सिंह, गुरमीत

शोध-विषय - आधुनिक प्रमुख हिन्दी कवियों के काव्य में भारतीय संस्कृति के विविध आयाम

(केवल जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और रामधारी सिंह 'दिनकर' का काव्य)

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - भावुक, कृष्ण

वर्ष - 1999

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **445** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में भारतीय संस्कृति के आर्थिक, ऐतिहासिक एवं दार्शनिक आयामों की चर्चा की गई है। द्वितीय अध्याय में भारतीय संस्कृति के धार्मिक, नैतिक और प्राकृतिक-भौगोलिक आयामों का विश्लेषण किया गया है। तृतीय अध्याय में भारतीय संस्कृति के भौतिक, रहन-सहन संबंधी, राजनीतिक-प्रशासनिक एवं अन्य सांस्कृतिक आयामों का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में प्रसाद के काव्य के परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति के विविध आयामों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में निराला के काव्य के संदर्भ में भारतीय संस्कृति के विविध आयामों का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में दिनकर के काव्य के संदर्भ में भारतीय संस्कृति के विविध आयामों का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा संयत तथा स्पष्ट है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण धूमिल तथा अस्पष्ट है, जिल्दबंदी अच्छी है।

49. शोधार्थी - ऋषिपाल

शोध-विषय - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य में लोक-संस्कृति

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - शर्मा, वेदव्रत

वर्ष - 2000

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **353** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में लोक-संस्कृति का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य के परिप्रेक्ष्य में लोक-विश्वासों का विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में लोक-पर्वों का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में लोक-संस्कारों का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में लोक-साहित्य का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में लोक-जीवन का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत दी गई है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत उपलब्ध हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी उच्च कोटि के हैं।

50. शोधार्थी - ओमप्रकाश

शोध-विषय - समकालीन हिन्दी कविता का वैचारिक आधार

(सन् 1900 से आज तक)

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - भूषण, भारत

वर्ष - 2000

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **387** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में साहित्य और विचारधारा का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में समकालीन परिवेश और रचनाकारों का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में साठोत्तरी हिन्दी कविता के वैचारिक आधार को प्रस्तुत किया गया है। चतुर्थ अध्याय में समकालीन हिन्दी कविता के वैचारिक आधार का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। वर्ष का उल्लेख नहीं किया गया है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण तथा पृष्ठांकन व्यवस्थित हैं। पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत दी गई है। अनुच्छेदों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा प्रभावशाली है। मात्रात्मक त्रुटियां व वर्तनी संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उच्च स्तर का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

51. शोधार्थी - किशोर, कमल

शोध-विषय - सप्तक-काव्य ः सांस्कृतिक चेतना के परिप्रेक्ष्य में

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - भल्ला, सरस्वती

वर्ष - 2000

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **435** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में सांस्कृतिक चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में सप्तक-काव्य की पृष्ठभूमि का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में सप्तक काव्य का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना के परिप्रेक्ष्य में सप्तक काव्य का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना के परिप्रेक्ष्य में सप्तक काव्य का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में मानव-मूल्यों के संदर्भ में सप्तक काव्य का विवेचन किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम व्यतिक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। अध्यायीकरण में अध्यायों के समक्ष पृष्ठांकन नहीं किया गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

52. शोधार्थी - कुमारी, नीलम

शोध-विषय - हिन्दी के प्रमुख आधुनिक प्रबंधात्मक काव्यों में मिथक के अनुप्रयोगात्मक रूपों का अध्ययन

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - कुंतल, रमेश 'मेघ'

वर्ष - 2000

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **555** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में मिथक का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में

मिथक का भाषिक एवं काव्यात्मक स्वरूप प्रकट किया गया है। तृतीय अध्याय में मिथक के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी प्रबंधात्मक काव्यों का सर्वेक्षण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में मिथक अनुप्रयोग के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक हिन्दी प्रबंध काव्यों में कथानक का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में मिथक के परिप्रेक्ष्य में पात्र-सृष्टि का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में मिथक के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक व्यवस्था का विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में मिथक के परिप्रेक्ष्य में प्रतीक एवं बिम्ब-विधान का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रात्मक त्रुटियां व वर्तनी संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

53. शोधार्थी - कौर, रवीन्द्र

शोध-विषय - भारतेन्दु तथा द्विवेदीयुगीन काव्य में वर्णित राष्ट्रीय, सांस्कृतिक चेतना की तुलना

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - शर्मा, लक्ष्मीनारायण

वर्ष - 2000

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **232** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में राष्ट्रीयता एवं संस्कृति का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में भारतेन्दुयुगीन कवियों और उनके काव्यों के स्वरूप का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में महावीर प्रसाद द्विवेदी कालीन कवियों और उनके काव्यों के स्वरूप का अध्ययन

किया गया है। पंचम अध्याय में भारतेन्दुयुगीन काव्य के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में द्विवेदीकालीन काव्य के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना का विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में भारतेन्दु तथा द्विवेदीयुगीन राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

54. शोधार्थी - बाला, किरण

शोध-विषय - समकालीन हिन्दी कविता में मूल्य-संक्रमण
(सन् 1980 से 1996 तक)

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - भूषण, भारत

वर्ष - 2000

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध 6 अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल 296 पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में समकालीन एवं मूल्य-संक्रमण का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में सामाजिक परिप्रेक्ष्य में समकालीन हिन्दी कविता में मूल्य-संक्रमण का विश्लेषण किया गया है। तृतीय अध्याय में सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में समकालीन हिन्दी कविता में मूल्य-संक्रमण का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में तथा पंचम अध्याय में आर्थिक परिप्रेक्ष्य में समकालीन हिन्दी कविता में मूल्य-संक्रमण का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में

शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची सही है। अध्यायीकरण तथा पृष्ठांकन यथानियम हैं। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत उपलब्ध हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा व विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

55. शोधार्थी - शर्मा, ज्योति

शोध-विषय - आधुनिक हिन्दी कविता में सांस्कृतिक चेतना

(विशेष संदर्भ- रामधारी सिंह 'दिनकर', मैथिलीशरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' एवं माखन लाल चतुर्वेदी)

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - भल्ला, सरस्वती

वर्ष - 2000

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **283** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में सांस्कृतिक चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में आधुनिक हिन्दी कविता का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में आधुनिक हिन्दी कविता के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय चेतना व संस्कृति का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में सांस्कृतिक चेतना का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में युगबोध व सांस्कृतिक चेतना के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक हिन्दी कविता का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रात्मक त्रुटियां व वर्तनी के प्रयोग की अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध-टंकण अस्पष्ट है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

56. शोधार्थी - शर्मा, मनीषी

शोध-विषय - समकालीन कविता का अभिव्यंजना पक्ष

(सन् 1980 से 1996 तक)

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - गौतम, मीरा

वर्ष - 2000

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध 8 अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल 460 पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में समकालीन हिन्दी कविता का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में कविता के अभिव्यंजना पक्ष का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में समकालीन हिन्दी कविता के परिप्रेक्ष्य में काव्य-परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में समकालीन कविता के काव्यशास्त्र का संस्कृत, हिन्दी और पाश्चात्य-दृष्टि से अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में समकालीन कविता के परिप्रेक्ष्य में अभिव्यंजना एवं काव्य-शिल्प का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में भाषायी अभिव्यंजना का विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में समकालीन कविता के परिप्रेक्ष्य में अभिव्यंजना पक्ष की नवीन स्थापनाओं का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेतों का उल्लेख किया गया है। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां रह गई हैं। प्रबंध का टंकण सामान्य स्तर का है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

57. शोधार्थी - ओमप्रकाश

शोध-विषय - नवीन चेतना के प्रबंध काव्यों का शिल्प-विधान

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - मित्तल, प्रेमचन्द

वर्ष - 2001

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **332** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नवीन चेतना का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में प्रबंध काव्य का विश्लेषण किया गया है। तृतीय अध्याय में शिल्प के नये आयामों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में प्रतीक के नए आयामों का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में बिम्ब के नये आयामों का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में नवीन उपमान विधान एवं अलंकार-विधान, शैली-विधान तथा छन्द-योजना का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में कतिपय श्रेष्ठ प्रबंध काव्यों का विवेचन किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध का टंकण कार्य ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

58. शोधार्थी - सिंह, बलवेन्द्र

शोध-विषय - हिन्दी हाइकु ः संवेदना और शिल्प

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - प्रकाश, जय

वर्ष - 2001

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत शोध-प्रबंध **4** खंडों के अंतर्गत **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **213** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **2** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संवेदना और शिल्प का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हाइकु साहित्य का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। द्वितीय खंड में **2** अध्याय हैं। तृतीय अध्याय में हिन्दी हाइकु के परिप्रेक्ष्य में संवेदना का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में हिन्दी हाइकु के परिप्रेक्ष्य में शिल्प-विधान का अध्ययन किया गया है। तृतीय खंड में पंचम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। चतुर्थ खंड में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क नहीं रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

59. शोधार्थी - कमल, कमलेश

शोध-विषय - आधुनिक हिन्दी कविता में व्यक्तित्व का विघटन ः **1950** से **1960** तक

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - परेश

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **284** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में आधुनिक हिन्दी कविता का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में व्यक्तित्व विघटन का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में काव्य-वस्तु के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक हिन्दी कविता में व्यक्तित्व विघटन का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ

अध्याय में शिल्प-विधान के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक हिन्दी कविता में व्यक्तित्व विघटन का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में काव्य-दृष्टि के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक हिन्दी कविता में व्यक्तित्व विघटन का विवेचन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

60. शोधार्थी - कुमार, सुरेश

शोध-विषय - आठवें दशक की हिन्दी कविता ः वैयक्तिकता एवं अतिबौद्धिकता

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - चोपड़ा, जगमोहन

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **189** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में वैयक्तिकता एवं अतिबौद्धिकता का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में ज्ञान-विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में वैयक्तिकता एवं अतिबौद्धिकता का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में साहित्य के परिप्रेक्ष्य में वैयक्तिकता और अतिबौद्धिकता को विश्लेषित किया गया है। चतुर्थ अध्याय में आठवें दशक की हिन्दी कविता के संदर्भ में वस्तुगत पक्ष और वैयक्तिकता का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में आठवें दशक की हिन्दी कविता के संदर्भ में वस्तुगत पक्ष और अतिबौद्धिकता का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में आठवें दशक की हिन्दी कविता के संदर्भ में शिल्पगत पक्ष, वैयक्तिकता एवं अतिबौद्धिकता का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी क्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

61. शोधार्थी - गुप्त, रमेश

शोध-विषय - महाभारत पर आधारित आधुनिक हिन्दी खंडकाव्य ः पौराणिकता और आधुनिकता

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - मिश्र, नरेश

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **226** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में पौराणिकता और तत्कालीन परिस्थितियों का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में आधुनिक काल और तत्संबंधित परिस्थितियों का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में महाभारत पर आधारित आधुनिक हिन्दी खंडकाव्यों का विकासक्रम प्रस्तुत किया गया है। चतुर्थ अध्याय में आधुनिक हिन्दी खंडकाव्यों के परिप्रेक्ष्य में पौराणिकता में नवीन उद्भावनाओं का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में आधुनिक हिन्दी खंडकाव्यों के परिप्रेक्ष्य में पौराणिकता और आधुनिकता का समन्वय किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। कहीं-कहीं मात्रा व विराम चिह्नों संबंधी अशुद्धियां मिलती हैं। प्रबंध का टंकण कार्य सामान्य स्तर का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

62. शोधार्थी - चंद, सुभाष

शोध-विषय - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में गांधी-दर्शन

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - सिंहल, बैजनाथ

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **319** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में गांधी-दर्शन का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में गांधी-दर्शन के परिप्रेक्ष्य में आध्यात्मिक दर्शन का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में नैतिक दर्शन का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में राजनीतिक दर्शन का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में राष्ट्रीय दर्शन का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध के मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहपूर्ण है। कहीं-कहीं मात्रा व विराम चिह्नों संबंधी अशुद्धियां मिलती हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी उत्तम हैं।

63. शोधार्थी - धीमान, अनील

शोध-विषय - हिन्दी की समकालीन लम्बी कविताओं का ऐतिहासिक विश्लेषण ः **1965-1995**

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - बेदी, हरमहेन्द्र सिंह

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **301** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में आधुनिकता और समकालीनता के अन्तःसंबंधों का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में आधुनिक प्रक्रिया और समकालीन कविता का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में नए काव्य माध्यम के परिप्रेक्ष्य में लम्बी कविताओं का विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में लम्बी कविताओं की विशिष्टता और तात्त्विक संरचना का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में हिन्दी की समकालीन लम्बी कविताओं का ऐतिहासिक विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में ऐतिहासिकता एवं संरचना की दृष्टि से कुछ प्रमुख समकालीन लम्बी कविताओं का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन सही है। पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अध्यायों में उपशीर्षक की संरचना की गई है। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली सुगठित है। मात्रा एवं विराम चिह्नों का शुद्ध प्रयोग दृष्टिगत होता है। प्रबंध का टंकण एवं जिल्दबंदी उत्तम हैं।

64. शोधार्थी - यादव, सुमन

शोध-विषय - हिन्दी सतसई परम्परा और ए . बी. (अमरेन्द्र बहादुर) सिंह का सतसई साहित्य

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - गुप्त, लालचंद 'मंगल'

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **400** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हिन्दी सतसई परम्परा का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में ए. बी. के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में ए. बी. सिंह के सतसई परम्परा के परिप्रेक्ष्य में संवेदना के विविध आयामों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ

अध्याय में सिंह के सतसई साहित्य के परिप्रेक्ष्य में शिल्प के विविध आयामों का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा, विराम चिह्न व वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी उत्तम हैं।

65. शोधार्थी - रानी, नीना

शोध-विषय - आधुनिक राष्ट्रीय काव्य के परिप्रेक्ष्य में छायावादी काव्य का मूल्यांकन

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - तिवारी, शैल कुमारी

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **251** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में राष्ट्र तथा राष्ट्रीय भावना का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में भारतेन्दु-काव्य के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय चेतना का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में द्विवेदीयुगीन काव्य के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय चेतना का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में छायावाद का सामान्य परिचय दिया गया है। पंचम अध्याय में छायावादी काव्य के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय चेतना का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची एवं अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत मिलते हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। विराम चिह्नों की त्रुटियां रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उच्च स्तरीय है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

66. शोधार्थी - रानी, सुशीला

शोध-विषय - छायावादोत्तर काव्य में मार्क्स-दर्शन

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - देशवाल, धर्मपाल

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **231** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में काव्य और दर्शन का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में दर्शन के विभिन्न मतों का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में मार्क्स-दर्शन का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में छायावादोत्तर काव्य की पृष्ठभूमि का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में छायावादोत्तर काव्य का सर्वेक्षण किया गया है। षष्ठ अध्याय में छायावादोत्तर काव्य के परिप्रेक्ष्य में मार्क्स-दर्शन का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत उपलब्ध नहीं हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा व विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

67. शोधार्थी - रावत, सीमा

शोध-विषय - मैथिलीशरण गुप्त और रामधारी सिंह दिनकर के काव्यगत नारी-संवेदना का तुलनात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - सुजाता

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **9** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **465** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित

की गई है। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में नारी-संवेदना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में मैथिलीशरण गुप्त और रामधारी सिंह दिनकर के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं तद्युगीन परिवेश का परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में मैथिलीशरण गुप्त और रामधारी सिंह दिनकर के काव्य के परिप्रेक्ष्य में नारी-पात्रों की सामाजिक संवेदना का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में मैथिलीशरण गुप्त और रामधारी सिंह दिनकर के काव्य के परिप्रेक्ष्य में नारी-पात्रों की राजनीतिक और राष्ट्रीय संवेदना की तुलना की गई है। षष्ठ अध्याय में मैथिलीशरण गुप्त और रामधारी सिंह दिनकर के काव्य के परिप्रेक्ष्य में नारी-पात्रों की सांस्कृतिक संवेदना का तुलनात्मक विवेचन किया गया है। सप्तम अध्याय में मैथिलीशरण गुप्त और रामधारी सिंह दिनकर के काव्य के परिप्रेक्ष्य में नारी-पात्रों के सुलभ मानवतावादी एवं प्रगतिवादी संवेदना का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। अष्टम अध्याय में मैथिलीशरण गुप्त और रामधारी सिंह दिनकर के काव्य के परिप्रेक्ष्य में नारी-पात्रों में संवेदनात्मक दृष्टि से रूपगत तुलना की गई है। नवम अध्याय में शोध-विषय का सार तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। वर्ष का उल्लेख कहीं भी नहीं किया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

68. शोधार्थी - शर्मा, रिन्कू

शोध-विषय - आधुनिक हिन्दी कविता में मानव-संघर्ष
(सन् 1936 से 1980 तक)

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - तिवारी, शैल कुमारी

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **303** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित

की गई है। प्रथम अध्याय में मानव-संघर्ष का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में आधुनिक हिन्दी कविता के परिप्रेक्ष्य में मानव-संघर्ष की परम्परा का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में आधुनिक हिन्दी कविता के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक संघर्ष का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में राजनैतिक संघर्ष का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में धार्मिक संघर्ष का उल्लेख किया गया है। षष्ठ अध्याय में आर्थिक संघर्ष का विवेचन किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत अल्प हैं। संदर्भ-सूची लेखक नामानुक्रम में है। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा व विराम चिह्न की अशुद्धियां कहीं-कहीं हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी मध्यम स्तर के हैं।

69. शोधार्थी - सारिका

शोध-विषय - द्विवेदीयुगीन काव्य में राष्ट्रीयता की भावना ः विशेष संदर्भ (महावीर प्रसाद द्विवेदी, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', श्रीधर पाठक, सोहन लाल द्विवेदी, सियाराम शरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी)

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - सारस्वत, ओम् प्रकाश

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **353** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में द्विवेदीयुग का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में राष्ट्रीयता का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में द्विवेदीयुगीन काव्य के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीयता एवं राजनीतिक परिवेश का विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में सामाजिक परिवेश का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में सांस्कृतिक परिवेश का विश्लेषण किया गया

है। षष्ठ अध्याय में आर्थिक परिवेश का मूल्यांकन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची व्यवस्थित है। अध्यायीकरण एवं पृष्ठांकन सही हैं। पाद-टिप्पणियां नियमानुसार हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। वर्तनी तथा मात्रा संबंधी अशुद्धियां रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उच्च कोटि का है तथा जिल्दबंदी अच्छी है।

70. शोधार्थी - सिंह, हरेन्द्र

शोध-विषय - हिन्दी कविता में उत्तराखण्ड के कवियों का योगदान

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - चोपड़ा, जगमोहन

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **259** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में उत्तराखण्ड के पूर्ववर्ती कवियों का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में समकालीनता को विश्लेषित किया गया है। तृतीय अध्याय में उत्तराखण्ड के प्रतिनिधि समकालीन कवियों की चर्चा की गई है। चतुर्थ अध्याय में अन्य समकालीन कवियों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में कवियों से जो साक्षात्कार किया गया है, उसको विश्लेषित किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण तथा पृष्ठांकन व्यवस्थित हैं। पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी उच्च कोटि के हैं।

71. शोधार्थी - शर्मा, सुनीता

शोध-विषय - बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दो दशकों की कविता में विद्रोह

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - गौतम, मीरा

वर्ष - 2003

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **361** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में विद्रोह का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी कविता के वादों का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दो दशकों के परिप्रेक्ष्य में कविता में विद्रोह का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में हिन्दी कविता के परिप्रेक्ष्य में विद्रोह की स्थिति का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में हिन्दी कविता के परिप्रेक्ष्य में जीवन-दृष्टि का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों के अनुकूल है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा, विराम चिह्न तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध का टंकण कार्य ठीक है तथा जिल्दबंदी अच्छी है।

72. शोधार्थी - कुमार, मनोज

शोध-विषय - प्रतिबद्धता के संदर्भ में साठोत्तरी हिन्दी कविता का अध्ययन ः **1961** से **1990** तक

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - यादव, सकुन्तला

वर्ष - 2004

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **4** खंडों के अंतर्गत **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **222** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **3** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में साठोत्तरी हिन्दी कविता का सामान्य परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में प्रतिबद्धता का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय खंड में **3** अध्याय हैं। चतुर्थ अध्याय में सन् साठ पूर्व हिन्दी कविता के परिप्रेक्ष्य में प्रतिबद्धता का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में वर्गीय समाज के संदर्भ में साठोत्तरी हिन्दी कविता में प्रतिबद्धता का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में साठोत्तरी हिन्दी कविता में प्रतिबद्धता के संदर्भ में वर्ग-संघर्ष और साम्यवादी स्वप्न का उल्लेख किया गया है। तृतीय खंड में सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। चतुर्थ खंड में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। संदर्भ-सूची आकारादिक्रम में है। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

73. शोधार्थी - शर्मा, गार्गी

शोध-विषय - 'उत्तर साकेत' महाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - गुप्त, लालचंद 'मंगल'

वर्ष - 2005

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **405** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में सोहन लाल 'रामरंग' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में 'उत्तर साकेत' महाकाव्य के परिप्रेक्ष्य में तत्त्व-दर्शनों का अध्ययन किया गया

है। तृतीय अध्याय में 'उत्तर साकेत' महाकाव्य के परिप्रेक्ष्य में कथानक का विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में चरित्र का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में उद्देश्य एवं जीवन-दर्शन का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में 'उत्तर साकेत' महाकाव्य के परिप्रेक्ष्य में रचना-शिल्प का वर्णन किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमानुसार है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। प्रबंध की भाषा आसान है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां यदाकदा मिलती है। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

74. शोधार्थी - सिंह, सुखबीर

शोध-विषय - स्वातंत्र्योत्तर रामकथात्मक प्रबंध काव्यों में राष्ट्रीय चेतना

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - शर्मा, पूर्णचंद

वर्ष - 2005

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **244** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में राष्ट्रीय चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर रामकथात्मक प्रबंध काव्यों का विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर रामकथात्मक प्रबंध काव्यों के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक सरोकार का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर रामकथात्मक प्रबंध काव्यों के परिप्रेक्ष्य में राजनीतिक चेतना का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में सांस्कृतिक आयामों का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में राष्ट्रीय चेतना के अन्य आयामों का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम ठीक हैं। विषय-सूची व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों

का निर्वाह किया गया है। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक दिए गए हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा कसी हुई है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां बहुत कम हैं। प्रबंध का टंकण ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

75. शोधार्थी - सोहल, मनजीत कौर

शोध-विषय - मृत्युबोध के संदर्भ में गोपालदास नीरज और शिवकुमार बटालवी की कविता का तुलनात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - भट्ट, कैलाश

वर्ष - 2005

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत शोध-प्रबंध **2** खंडों के अंतर्गत **17** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **420** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **5** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में मृत्यु और मृत्युबोध का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में मृत्युबोध की दार्शनिक अवधारणा का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में मृत्युबोध का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में मृत्युबोध के विभिन्न प्रेरक तत्त्वों का उल्लेख किया गया है। पंचम अध्याय में मृत्युबोध पर विजय का अध्ययन किया गया है। द्वितीय खंड में **12** अध्याय हैं। षष्ठ अध्याय में गोपालदास नीरज के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया गया है। सप्तम अध्याय में शिवकुमार बटालवी के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया गया है। अष्टम अध्याय में गोपालदास नीरज और शिवकुमार बटालवी के काव्यों की प्रमुख विधाओं का अध्ययन किया गया है। नवम अध्याय में गोपालदास नीरज और शिवकुमार बटालवी के काव्यों की साहित्यिक पृष्ठभूमि का अध्ययन किया गया है। दशम अध्याय में गोपालदास नीरज के खंड काव्य 'मृत्युगीत' का विवेचन किया गया है। एकादश अध्याय में शिवकुमार बटालवी के खंड काव्य 'मैं ते मैं' का विवेचन किया गया है। द्वादश अध्याय में गोपालदास नीरज के काव्य में मृत्युबोध का अध्ययन किया गया है। त्रयोदशी अध्याय में शिवकुमार बटालवी के काव्य में मृत्युबोध का अध्ययन किया गया है। चतुर्दश अध्याय में समकालीन हिन्दी कवियों के काव्यों के संदर्भ में मृत्युबोध का अध्ययन किया गया है। पंचदश अध्याय में समकालीन पंजाबी कवियों के काव्यों के संदर्भ में मृत्युबोध का अध्ययन किया गया है।

षोडश अध्याय में गोपालदास नीरज और शिवकुमार बटालवी के मृत्युबोध का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। सप्तदश अध्याय में शोध-विषय का सार तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। परन्तु वर्ष का कहीं भी उल्लेख नहीं है। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

76. शोधार्थी - ऋतु

शोध-विषय - साठोत्तर हिन्दी खंडकाव्यों में जीवन-मूल्य

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - शर्मा, नंदकिशोर

वर्ष - 2006

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **319** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हिन्दी खंडकाव्य का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में जीवन-मूल्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में साठोत्तर हिन्दी खंडकाव्यों का परिचयात्मक सर्वेक्षण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में साठोत्तर हिन्दी खंडकाव्यों के परिप्रेक्ष्य में धार्मिक एवं दार्शनिक मूल्यों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में सामाजिक एवं आर्थिक मूल्यों का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में साठोत्तर हिन्दी खंडकाव्यों के परिप्रेक्ष्य में राजनीतिक मूल्यों का विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

77. शोधार्थी - चंद, प्रकाश

शोध-विषय - नरेश मेहता एवं कुंवर नारायण के काव्य-सृजन में मिथकीय तत्त्व

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - मेहता, रामनाथ

वर्ष - 2006

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **298** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में मेहता और नारायण के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में मिथक और काव्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में विवेच्य कवियों के काव्य के परिप्रेक्ष्य में वैदिक एवं औपनिषदिक मिथकीय तत्त्वों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में रामायणीय मिथकीय तत्त्वों का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में महाभारतीय मिथकीय तत्त्वों का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में स्फूट कवियों के परिप्रेक्ष्य में मिथकीय तत्त्वों का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम व्यतिक्रम में हैं। विषय-सूची सही है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत उपलब्ध हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

78. शोधार्थी - चौहान, रेखा

शोध-विषय - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य में संस्कृति-निरूपण

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - यादव, रामपत

वर्ष - 2006

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **10** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **387** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता

ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर युग की विविध परिस्थितियों का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में संस्कृति का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में स्वातंत्र्य पूर्व एवं स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य की पृष्ठभूमि का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में कतिपय सप्तकीय तथा सप्तकेत्तर कवियों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। पंचम अध्याय में सांस्कृतिक संदर्भ में स्वातंत्र्योत्तर युग के कतिपय प्रमुख प्रबंध काव्यों का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य के परिप्रेक्ष्य में मानव-मूल्यों का विवेचन किया गया है। सप्तम अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य के परिप्रेक्ष्य में युगबोध और संस्कृति के बदलते आयामों का विश्लेषण किया गया है। अष्टम अध्याय में व्यष्टि और समष्टि का अध्ययन किया गया है। नवम अध्याय में नैतिकता और परम्परा का अध्ययन किया गया है। दशम अध्याय में संस्कृति-निरूपण के परिप्रेक्ष्य में भाषा, बिम्ब और प्रतीक का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमानुसार है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण तथा पृष्ठांकन व्यवस्थित तथा वर्गीकृत हैं। पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। संदर्भ -सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा संयत तथा सुगठित है। मात्रात्मक त्रुटियां व विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां बहुत कम हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उच्च स्तर का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

79. शोधार्थी - कौर, परमप्रीत

शोध-विषय - हिन्दी एवम् पंजाबी के प्रगतिवादी काव्य का तुलनात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - बेदी, हरमहेन्द्र सिंह

वर्ष - 2006

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **11** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **608** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में प्रगतिवाद का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में मार्क्सवाद का सामान्य परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में प्रगतिवाद के परिप्रेक्ष्य में यथार्थ का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में प्रगतिवाद के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी एवं पंजाबी के

कवियों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में हिन्दी एवं पंजाबी के प्रगतिवादी काव्यों के परिप्रेक्ष्य में मूल-सरोकारों का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में हिन्दी एवं पंजाबी के प्रगतिवादी काव्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में प्रगतिवादी काव्य के मूल-उद्देश्यों का उल्लेख किया गया है। अष्टम अध्याय में भाषा-शिल्प का विवेचन किया गया है। नवम अध्याय में पंजाब के हिन्दी एवं पंजाबी प्रगतिवादी काव्य के परिप्रेक्ष्य में संदर्भ और प्रवृतियों का विश्लेषण किया गया है। दशम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय तथा उपलब्धियां दी गई है। एकादश अध्याय में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-नियमों का पालन करता है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षकों की संरचना की गई है। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा प्रभावशाली है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी उत्तम हैं।

80. शोधार्थी - रानी, सरूप

शोध-विषय - अज्ञेय और श्री नरेश मेहता के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - सेठी, नीलम

वर्ष - 2006

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **623** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में तुलनात्मक-शोध का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता के विकासक्रम का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर परिस्थितियों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में अज्ञेय और मेहता के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। पंचम अध्याय में विवेच्य कवियों के काव्य के परिप्रेक्ष्य में भावगत प्रवृतियों का मूल्यांकन किया गया है। षष्ठ अध्याय में विवेच्य कवियों के काव्य के परिप्रेक्ष्य में जीवन-दृष्टि का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में काव्य-शिल्प का

अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में विवेच्य कवियों के काव्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों के अनुकूल नहीं है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सजग रही है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

81. शोधार्थी - कुमार, नवीन

शोध-विषय - स्वातंत्र्योत्तर कृष्ण कथात्मक प्रबंधकाव्यों का बिम्ब-विधान

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - पाण्डेय, रामसजन

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **342** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में बिम्ब-विधान का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर कृष्ण कथात्मक प्रबंध काव्यों का सामान्य परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर कृष्ण कथात्मक प्रबंध काव्यों के परिप्रेक्ष्य में ऐन्द्रिय-बिम्बों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में प्ररेणापरक बिम्बों का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में अनुभूतिपरक बिम्बों का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में अभिव्यंजनापरक बिम्बों का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रात्मक त्रुटियां तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां न के बराबर है। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

82. शोधार्थी - कुमार, रमेश

शोध-विषय - स्वातंत्र्योत्तर राम कथात्मक प्रबंधकाव्यों में संघर्ष-चेतना

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - पाण्डेय, रामसजन

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **342** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संघर्ष का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज के परिप्रेक्ष्य में संघर्ष की परिस्थितियों का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर रामकथात्मक प्रबंध काव्यों का परिचयात्मक विवरण दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर रामकथात्मक प्रबंध काव्यों के परिप्रेक्ष्य में राजनीतिक संघर्ष का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में सामाजिक संघर्ष का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर रामकथात्मक प्रबंध काव्यों के परिप्रेक्ष्य में संघर्ष के अन्य रूपों का विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमानुसार है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत हैं। पृष्ठांकन ठीक है। पाद-टिप्पणियां शोध-प्रविधि के अनुरूप है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा, विराम चिह्न तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उत्तम है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

83. शोधार्थी - कुमार, सतीश

शोध-विषय - निराला के काव्य में समाज और पूंजीवाद का तुलनात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - रानी, पुष्पा

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत शोध-प्रबंध **3** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **158** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में समाजवाद और पूंजीवाद का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में निराला के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में आर्थिक व सामाजिक आयामों के परिप्रेक्ष्य में निराला के काव्य में समाजवाद और पूंजीवाद का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण तथा पृष्ठांकन व्यवस्थित हैं। पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी उत्तम हैं।

84. शोधार्थी - पूनम

शोध-विषय - हिन्दी नवगीत को हरियाणा का योगदान

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - लाम्बा, मदन लाल

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **261** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नवगीत का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में नवगीत के उद्भव और विकास का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में हरियाणा की नवगीत लेखन-परम्परा का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में हरियाणा के नवगीतकारों का भावपरक विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में सौन्दर्य-चेतना का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में नवगीत का शिल्पपरक अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम व्यवस्थित हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण ठीक हैं।

पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण उच्च स्तर का है तथा जिल्दबंदी अच्छी है।

85. शोधार्थी - शर्मा, जगजीवन राम

शोध-विषय - समकालीन हिन्दी कविता में ग्रामीण बोध

(केदारनाथ सिंह, धूमिल तथा लीलाधर जगूड़ी के विशेष संदर्भ में)

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - कुमार, कृष्ण

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **490** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में समकालीन कविता और ग्रामीण बोध का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में ग्रामीण बोध के परिप्रेक्ष्य में केदारनाथ सिंह की कविताओं का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में ग्रामीण बोध के परिप्रेक्ष्य में धूमिल की कविताओं का विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में ग्रामीण बोध के परिप्रेक्ष्य में लीलाधर जगूड़ी की कविताओं का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में अन्य समकालीन कवियों के संदर्भ में समकालीन हिन्दी कविता का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क नहीं रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

86. शोधार्थी - अर्चना

शोध-विषय - द्विवेदीयुगीन प्रमुख कवियों की शब्दावली का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - वेदालंकार, विजय कुमार

वर्ष - 2008

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **227** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में भाषा का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में द्विवेदीयुगीन काव्य-शब्दावली का संरचनात्मक अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में द्विवेदीयुगीन काव्य-शब्दावली का ऐतिहासिक विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में द्विवेदीयुगीन काव्य-शब्दावली का विषयानुसार अर्थात प्रयोग की दृष्टि से उल्लेख किया गया है। पंचम अध्याय में द्विवेदीयुगीन काव्य-शब्दावली का अर्थ-विकासात्मक अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

87. शोधार्थी - बाला, सरोज

शोध-विषय - मॉरीशस के राष्ट्रकवि ब्रजेन्द्र कुमार भगत 'मधुकर' विरचित काव्यरचनावली ः संवेदना और शिल्प

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - शर्मा, विजय दत्त

वर्ष - 2008

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **398** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित

की गई है। प्रथम अध्याय में मॉरीशस में भारतीय प्रवासिता के इतिहास का अध्ययन किया गया है। द्वितीय अध्याय में मधुकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में मॉरीशस के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी के उद्‌भव और विकास का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में उद्‌भव और विकास के परिप्रेक्ष्य में प्रवासी हिन्दी साहित्य का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में तद्‌युगीन प्रेरक परिस्थितियों का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में संवेदना के परिप्रेक्ष्य में मधुकर की काव्यरचनावली का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में शिल्प के परिप्रेक्ष्य में मधुकर काव्य रचनावली का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमानुसार है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत है। अध्यायीकरण में अध्यायों के समक्ष पृष्ठांकन नहीं किया गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षकों की संरचना हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल है, अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

88. शोधार्थी - कुमार, अश्मनी

शोध-विषय - कुमार विकल और पाश के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन
(राजनीतिक चेतना के परिप्रेक्ष्य में)

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - भुल्लर, हरिसिमरन कौर

वर्ष - 2009

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **262** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में राजनीतिक चेतना और तुलनात्मक साहित्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में कुमार विकल और पाश के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में विकल के काव्य के परिप्रेक्ष्य में राजनैतिक चेतना का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में पाश के काव्य के परिप्रेक्ष्य में राजनैतिक चेतना का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में कुमार और विकल के काव्य का राजनीतिक चेतना के परिप्रेक्ष्य में

तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची ठीक है तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। प्रबंध की भाषा अच्छी है। मात्रात्मक त्रुटियां तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उच्च स्तर का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

89. शोधार्थी - कुमार, पंकज

शोध-विषय - समकालीन कविता में व्यंग्य-संवेदना

(सन् उन्नीस सौ पचहत्तर के बाद की कविता)

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - सारस्वत, ओम् प्रकाश

वर्ष - 2009

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **276** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में समकालीन चिंतन के आयामों का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में कविता और व्यंग्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में समकालीन हिन्दी कविता के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक व्यंग्य का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में समकालीन हिन्दी कविता के परिप्रेक्ष्य में राजनीतिक व्यंग्य का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में सांस्कृतिक व्यंग्य का उल्लेख किया गया है। षष्ठ अध्याय में आर्थिक व्यंग्य का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत उपलब्ध हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धिया अल्प हैं। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

विवेच्य विश्वविद्यालयों में आधुनिककालीन काव्य संबंधी सामान्य, सैद्धांतिक एवं तुलनात्मक संबंधी **89** शोध-विषयों पर शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं। कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र में सबसे ज्यादा **19** शोध-विषयों पर शोध-कार्य हुआ है। पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में **17** शोध-विषयों पर, गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में **16** शोध-विषयों पर, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में **16** शोध-विषयों पर, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक में **11** शोध-विषय पर, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में **9** शोध-विषयों पर तथा जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू में **1** शोध-विषय पर शोध-कार्य सम्पन्न हुआ है।

निष्कर्षतः विवेच्य विश्वविद्यालयों में आधुनिककाल संबंधी कुल **198** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं। सबसे ज्यादा कार्य महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय में हुआ है। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक में **50** शोध-विषयों पर शोध-प्रबंध उपल्ब्ध हुए हैं। इसके पश्चात् कु क्षेत्र विश्वविद्यालय का नाम आता है। कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र में **46** शोध-विषयों पर शोध-कार्य हुआ है। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में **36** शोध-विषयों पर, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में **27** शोध-विषयों पर, गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में **25** शोध-विषयों पर, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में **12** शोध-विषयों पर तथा जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू **2** में शोध-विषय पर शोध-कार्य सम्पन्न हुआ है।

आधुनिककालीन संबंधी सामान्य, सैद्धान्तिक और तुलनात्मक काव्य संबंधी सबसे ज्यादा शोध-कार्य हुआ है। इस संबंधी कुल **89** शोध-प्रबंध मिले हैं। भारतेन्दु और द्विवेदीयुगीन कव्य संबंधी शोध-कार्य सबसे कम हुआ है। इस संबंधी कुल **7** शोध-प्रबंध ही मिले हैं। प्रयोगवाद, नई कविता एवं स्वातंत्र्योत्तर काव्य संबंधी **64** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं। राष्ट्रीय, सांस्कृतिक-काव्यधारा और गीतिकाव्य संबंधी **21** शोध-प्रबंध उपलब्ध हुए हैं। छायावाद और प्रगतिवाद काव्य संबंधी **17** शोध-ग्रंथ मिले हैं।